वर्ष 8, अंक 11 अगस्त 2009

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

विश्वस्नेहसमाज

(एक क्रांति)

कीमत 5 रुपये

दूरदर्शन अथवा धूर्तदर्शन

भ्रष्टाचार का मनोविज्ञान

ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या एवं प्रयास

सिर्फ तलाक कहने से नही टूटते संबंध

रचनाएं आमंत्रित है

निबंध संग्रह/कहॉनी संग्रह/व्यंग्य संग्रह हेतु

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : १५ दिसम्बर २००६

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

पत्रिका के आगामी विशेषांक

अगला विशेषांक :

बाल कवि डॉ० विनय मालवीय विशेषांकः अक्टूबर-०६

- विन्ध्य विशेषांक(नवं०६)
- अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवक विशेषांक-मई १०
- महिला रचनाकार विशेषांक
- अहिन्दी भाषी रचनाकार विशेषांक(अक्टू१०)

अपनी प्रतियां अभी बुक करवा लेवें। उपरोक्त सभी विशेषांको हेतु संबंधित आलेख/कहॉनियॉ/कविताएं/शुभकामना संदेश/विज्ञापन आमंत्रित है.

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षणः

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः८ अंकः११ अगस्त ०९, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अपनी बात

लोकलुभावन योजनाएं व उनका सच?

हमारी केन्द्र व राज्य सरकारे आती है, गरीबों के हित की बातें बड़े ही लुभावने तरीके से उठाती है. कुछ राजनीतिक दल व सरकारें इनके हित में आवश्यक कदम भी उठाती है. नयी योजनाएं व नये कानून बनते है लेकिन इन योजनाओं से, इन कानूनों से गरीबों का कितना भला होता है यह काबिले गौर है. वहीं ढाक के तीन पात. अब तक जितनी भी सरकारी योजनाएं आयी सबकी सबका वही हाल. इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए पिछली सप्रग सरकार ने गॉवों के गरीबों के लिए नरेगा नामक योजना चालू की. जिससे गरीबों को गॉव में रोजगार मिले. उनका ठेकेदारों के द्वारा शोषण न हो. शहरों की ओर पलायत रुके. और यह योजना वाकई काबिले तारिफ है. लेकिन हमारे भ्रष्टतंत्र के भ्रष्ट अफसर, मक्कार, कामचोर, घुसखोर बाबू, एन केन प्रकारेण ध ान के लालची जनप्रतिनिधि की मिलीभगत ने बाकी योजनाओं की तरह इस योजना की भी हवा निकाल दी. बिना पैसा दिए जॉब कार्ड नहीं बनते, अगर जॉब कार्ड बन भी गया तो काम नहीं मिलता, अगर काम मिल भी गया तो वाजिब पैसा नहीं मिलता. कहीं पचास रुपये, कहीं कहीं ६०रुपये दिए जाते है. बाकी पैसों अफसर बाबू,व नेताओं की तीकड़ी की तिजोरी की शोभा बढ़ाते हैं.

अतः हमारी सरकारों को चाहिए अगर वाकई गरीबों का भला करना चाहते हैं तो योजनाएं बनाने से पहले उनके सही क्रियान्वयन पर गहनता से विचार करना होगा. पहले सरकारों को खुद के कर्म को सुधारना होगा, जब वे खुद को सुधारेगें, तो अफसर, और बाबू भी अपने आप लाईन मे आ जाएंगे. सारी भ्रष्टाचार की जड़ की सर मे हैं. यानि सबसे ऊपर से यह सीढ़ी चलती है. जब ऊपर मंत्री को मासिक चाहिए, तो संबंधित विभाग के सचिव को भी, सचिव को चाहिए तो मंडल स्तर के अधिकारी, जिला स्तरीय अधिकारी, फिर तहसील, फिर ब्लाक, फिर ग्राम स्तर. ज्यादातर आम जन के हितार्थ बनी योजनाएं इन श्रृंखला की भेंट चढ़ कर १० प्रतिशत भी अपने कार्यानुरुप कार्यान्वित नहीं हो पाती है. आज अध िकारियों का स्थलीय निरीक्षण का मतलब निरीक्षण नहीं, बल्कि मासिक मांग में बढोत्तरी. अगर मासिक वसूली बढ़ गयी, तो सारी कमिया, सारी बुराईया खत्म. अन्यथा थोड़ी सी कमी भी किसी नीचे के बाबू, अधिकारी के लिए स्थानान्तरण, निलंबन लेकर आती है. जरुरत है आज भारत के शीर्ष नेताओं, शीर्ष अफसरों यानी सर को सही करने की, जब सर सही हो जाएगा तो पैर तो अपने आप सही हो ही जाइएगा. जब सर(दिमाग) दुरूस्त होगा, तो पैर थोड़ी बहुत कमी रहने के बावजूद भी सही काम करेगा.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

अन्दर के पृष्ठों में

अन्यः

दूरदर्शन अथवा धूर्तदर्शन-०५, ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या एवं प्रयास-०७, सिर्फ तलाक कहने से नहीं टूटते सबंध-०९ शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य-११, भ्रष्टाचार का मनोविज्ञान-१२, क्या आम आदमी स्वतंत्र हो पाया?-२०

स्थायी स्तम्भः

अपनी बात-०३, प्रेरक प्रसंग-०४ साहित्य समाचार-१०, १९,३०, कविताएं-०६,१३,१५,२२,२७,२८,२९,३३, पढकर हंसना मना है-१३, कहॉनीः परिवर्तन-१४, अध्यात्मः कल्याणकारी भगवान श्री राम-२१, स्नेहबाल मंच-२४, कहॉनीः काश वह मुझे बरी कर देता-२५, व्यक्तित्व : भक्ति और रीत काल के डॉ. किशोरीलाल-१६, खेल की दुनिया-३१, चिट्ठी आई है-३२, लघु कथाएं-३३, पुस्तक समीक्षा-३४

प्रेरक प्रसंग

✍ महावीर उधर से गुजर रहे थे. रास्तें में एक ग्रामीण ने चरणों पर गिरकर प्रणाम किया. उत्तर में उन्होंने भी उसके चरणों पर मस्तक टेका. ग्रामीण सकपकाया बोला–“आप! तपस्या के भंडार है. मैंने तो आपकी विभूति को नमन किया. मेरा नमन किसलिए.”
अर्हत बोले–“तेरे अंदर जो पवित्र आत्मा है, उसी को नमन है. मेरे ‘तप’ से तेरा ‘सत्य’ बड़ा है.”

✍ प्रभाशंकर पट्टनी भावनगर रियासत के दीवान होने के साथ संत प्रकृति के व्यक्ति थे. रियासत का काम-काज करते हुए वह निजी तौर पर अनेक लोगों की मदद करते रहते थे. एक दिन उनके सहायक ने उन्हें बताया कि एक नवनियुक्त न्यायाधीश आपसे मिलना चाहते हैं. दीवान साहब ने कहा कि न्यायाधीश महोदय को सत्कारपूर्वक मेरे पास लाओ. न्यायाधीश के आने पर प्रभाशंकर पट्टनी ने उन्हें आदर पूर्वक अपने पास बैठाया, नाश्ते की उचित व्यवस्था की. यह सब शिष्टाचार निबट जाने पर न्यायाधीश महोदय ने अपनी जेब से रुपयों की गड्डी निकाली और दीवान साहब की ओर बढ़ाते हुए बोले–“ये दस हजार रुपये, आपसे लिए गए ऋण कें.” इन्हें स्वीकार कर आप मुझे ऋणमुक्त करने की कृपा करें.
थोड़ा हैरान होते हुए प्रभाशंकर पट्टनी ने कहा–“लेकिन मैं तो आपसे पहले कभी नहीं मिला हूँ. मैंने भला आपको कब ऋण दिया.” उत्तर में उस युवा न्यायाधीश ने कहा–“मैं आपके गॉव की एक विधवा का बेटा हूँ. मेरी मॉ ने मेरी पढ़ाई के लिए आपसे कुछ रूपये लिए थे. मरने से पहले उन्हेंाने मुझे आदेश दिया था कि जब मैं कमाने लायक हो जाऊँ तो मैं आपका धन आपको वापस कर दूँ.” दीवान साहब एक पल के लिए मौन हुए फिर बोले–“सो तो ठीक है, पर ऋण चुकाने का यह तरीका ठीक नहीं. आप ऐसा करें कि इन रूपयों में कुछ और रूपये मिलाकर, आप गरीब छात्रों की मदद करें और फिर उन्हें प्रेरित करें कि वह भी समर्थ होकर कुछ ऐसा लोकोपकारी कार्य करें. लोकसेवा को एक परंपरा के रूप में ढालकर आप ऋणमुक्त हो सकेंगें.” वह युवा न्यायाधीश दीवान साहब की सद्वृत्ति देखकर श्रद्धा से झुक गए.

✍ यह मत सोचो कि इस संसार में दुःख ही दुःख है, तुम यहॉ भी स्थायी सुख प्राप्त कर सकते हो यदि अपनी अतृप्त तृष्णाओं का परित्याग कर दो. यथार्थ में बड़ी आपत्ति तृष्णा हैं, वह न तो कभी शांत होती है और न शिथिल पड़ती हैं. कामनाएँ पूर्ण होने पर भी संतोष नहीं होता, वरन पहले से भी और अधिक प्यास बढ़ती है. कहते हैं कि मनुष्य अपूर्ण है, किंतु यदि वह अपनी वासना NkM+nsr ksbl ht hou esai wkZgksl drk gS ✍ दाऊजी

अदाब अर्ज है

योगी योग न छोड़िए, योग का कर संघान।
योग–योग को एककर, योगी बना महान।।1।।

जब तक खुली न ऑख है, योग से सब घबराय।
ऑखे खुलते मिल गया, जीवन का स्वाध्याय।।2।।

योग में कहॉ बियोग है, योग का अर्थ है जोड़।
आत्म–ब्रम्ह द्वय एक है, बन जाता–बेजोड़।।3

मानव खुद में एकरा, ब्रम्ह–शक्ति–भंडार।
मानव–ब्रम्ह मिलन हुआ, मिलकर–बना अपार।।4

योग–विद्या सत्य ज्ञान है, योग क्रिया तू जान।
कर्ता के संघान से, जड़मति–होत–सुजान।।5।।

योग से जागे चेतना, योग से भागे–रोग।
जीवन के इस सार को, अन्धा–बन न भोग।।6।।

जीवन रहस्य का द्वार है, जीवन–है–अनमोल।
जीवन की भवतव्यता, धीरे–धीरे–तौल।।7।।

कौन है तू आया कहॉ, किसका है व्यापार।
कर्म है क्या जाना कहॉ, कौन चला बन हार।।8

जीवन मरन का फासला, जीवन का है सार।
जीवन के इस रहस्य में, नाच रहा संसार।।9।।

शिवेन्द्र त्रिपाठी, प्रतापगढ़, उ0प्र0.

आवरण

दूरदर्शन अथवा धूर्तदर्शन

- आजकल दूरदर्शन पर जितने भी कार्यक्रम दिखाये जाते हैं उनमें अर्द्धनग्न नृतकियों के अश्लील और फूहड़ नृत्य तथा फोन्डे, शारीरिक लटके, झटके दिखाये जाते है.
- भारतवर्ष का इतिहास भारतवर्ष की सभ्यता ऐसी घटनाओं से भरी पड़ी है. जिन पर नित नये सीरियल बनाये जा सकते है.

✍हितेश कुमार शर्मा,
बिजनौर, उ.प्र

जब केवल दूरदर्शन था समय से आरम्भ होता था समय से बन्द होता था. महिलाएं और कारोबारी लोग उसे सिर्फ विश्राम के क्षणों में देखते थे और दूरदर्शन पर धार्मिक, आस्थावान, अच्छी पुरानी फिल्में, ऐतिहासिक सीरियल दिखाये जाते थे और आजकल जितने भी कार्यक्रम दिखाये जाते हैं उनमें अधिकांश मं अर्द्धनग्न नृतिकियों के अश्लील और फूहड़ नृत्य तथा फोन्डे, शारीरिक लटके, झटके दिखाये जाते है. कहीं पर चक दे आ रहा है. कहीं जलवा दिखाया जा रहा है. कहीं धूम मचा दे, कहीं जोड़ियों और इन अश्लील नृत्य वाले सीरियल के कारण कभी-कभी साई बाबा या पृथ्वीराज चौहान जैसे सीरियल विलुप्त कर दिये जाते हैं. कामुक दृश्यों से भरपूर ऐसे सीरियल का क्या प्रभाव युवक व युवतियों पर पड़ रहा है. यह सहज ही देखा जा सकता है. कूढ़े के ढेर पर पड़े हुए नवजात शिशु ऐसी ही यौन विकृतियों की उपज है जो इन सीरियलों से उत्पन्न कामुकता से पैदा होती है.

उपरोक्त का उत्तर यह नहीं हो सकता कि आप ऐसे सीरियल न देखियें. केवल १० प्रतिशत सीरियल पर ही कभी-कभी जय श्रीकृष्ण, जय हनुमान, रामायण, महाभारत, जय गणेश, साई बाबा, आस्था या संस्कार प्रदर्शित होते हैं और वह भी केवल आधे घंटे के लिए. एक-एक घंटे और दो-दो घंटे के प्रोग्राम ऐसे सीरियलों के होते हैं जो बच्चों की सोच खराब कर देते हैं और हमारी सरकार सूचना व प्रसारण मंत्रालय इनको सोचने में असमर्थ है. क्योकि व्यक्गित स्वार्थ देश और जनता से ऊपर हो गये हैं.

दूरदर्शन पर ९० प्रतिशत ऐतिहासिक और धार्मिक सीरियल दिखाये जाने चाहिए. जिससे बच्चों के चरित्र का निर्माण हो. सामाजिक विकृतियॉं दूर हो और सामाजिक सुधार का प्रयास हो. भारतवर्ष का इतिहास भारतवर्ष की सभ्यता ऐसी घटनाओं से भरी पड़ी है. जिन पर नित नये सीरियल बनाये जा सकते है. इतिहास में इतने इतिहास पुरूष हुए हैं जिनका चरित्र-चित्रण समाज को नई चेतना दे सकता है. आल्हा-उदल, महाराणा प्रताप, शिवाजी, श्रीकृष्ण कथा, श्री राम कथा, बजरंगबली, छत्रसाल, दुर्गादास राठौर, कारगिल विजय, अब्दुल हमीद की कुर्बानी, श्रीमती इंदिरा गांधी का चरित्र-चित्रण, सिख गुरुओं की शोर्य कथायें, मंगल पाण्डे, सुभाष चन्द बोस, चन्द्र शेखर आजाद और भगत सिंह जैसे सिंह पुरुषों पर सीरियल बनाकर दिखाये जाने चाहिए.

अश्लील नृत्यों, कामुक दृश्यों और अधनिग्न नृतिकियों के डान्स देखकर ही इन मंत्रियों के पुत्र बलात्कार जैसे घिनौनी हरकते कर रहे हैं. इन मंत्रियों को केवल सत्ता और धन के अलावा अपने पुत्र, पुत्रियों और पत्नी के बारे में सोचने की फुरसत नहीं है. परिणाम स्वरुप प्रतिदिन किसी न किसी मंत्री पुत्र नाम व्यभिचार अथवा बलात्कार के मुकदमें में दर्ज हो जाता है. कितने महान है मंत्रीजी कि यह कहने में भी संकोच नहीं करते कि नामित्र पुत्र से उनका कोई संबंध नहीं है. कई मंत्री स्वयं भी ऐसी ही अश्लीलता के शिकार हुए हैं. धूर्तदर्शन की एक और विशेषता है विज्ञापनों की भरमार एक ही सीरियल पर एक विज्ञापन ५-५ बार दिखाया जाता है. ३० मिनट के सीरियल में हर २ मिनट बाद ३-५ मिनट के विज्ञापन दिये जाते है. सरकारा सीरियल के हिसाब से विज्ञापनों की सीमा भी निर्धारित करने में असमर्थ है. विज्ञापन से आदमी ऊब जाता है और यह विज्ञापन वाले जनता को पूरी तरह से मूर्ख समझने लगे हैं. जबकि जनता अब समझदार हो गयी है कि हाजमोला की एक गोली का विज्ञापन एक करोड़ में होता है. एक करोड़ से कम का विज्ञापन कोई भी क्रिकेटर, अभिनेता या अभिनेत्री नहीं देते और जितनी बार विज्ञापन दिखाया जाता है उसकी रॉयल्टी अलग से मिलती है यानि उस वस्तु के निर्माण के खर्चे में विज्ञापन का करोड़ो रुपयों का खर्चा और जुड़ जाता है. एक सीरियल में एक वस्तु का विज्ञापन केवल एक ही आना चाहिये इससे लोगों को राहत मिलती है. ऐसे सीरियल से क्या लाभ जिससे

वास्तविक दृश्य कम होते हैं विज्ञापन का प्रदर्शन अधिक होता है. विज्ञापनों पर प्रतिबंध होना अत्यन्त आवश्यक है.

धूर्तदर्शन पर धूर्तता की पराकाष्ठा यह है कि अंतहीन सीरियल का प्रदर्शन किया जा रहा है. चार-चार सौ एपीसोड के सीरियल प्रदर्शित हो रहे हे. बड़ी मुश्किल से सास भी कभी बहू थी और कसौटी जैसे सीरियल बंद हुए है. कुछ सीरियल तो इतने उबाऊ हो गये थे कि दर्शक उनके आते ही अपना टीवी बन्द कर देते थे. यदि हमें दूरदर्शन को दर्शनीय वाले सास भी कभी बहू थी अथवा कहानी घर-घ्घर की जैसे अंतहीन सीरियल प्रतिबंधित होने चाहियें.

पुरानी ऐतिहासिक फिल्मों का प्रदर्शन अच्छा प्रभाव डालता है वनस्पति आज की बलात्कार आधारित फिल्मों के प्रदर्शन सें. ऐसी फिल्मों को दिखाया जाना जिसमें आगजनी हत्याएं डकैती और बलात्कार के दृश्य हो बन्द होना चाहिये तभी हम दूरदर्शन को धूर्तदर्शन होने से बचा सकते हैं. दूरदर्शन सत्य और धर्म का दर्पण होना चाहियें.

आशा है सरकार तक यह पहुचेगी और संबंधित मंत्री महोदय निजी स्वार्थ को त्याग कर उपरोक्त संबंध में अवश्य विचार करेंगे तथा उचित निर्देश दूरदर्शन को देने की कृपा करेंगें.

पिया

सालों से इस दिल ने तहेदिल से
जिसका इन्तिज़ार किया है,
आपसे मिलकर कुछ ऐसा महसूस हुआ
कि जैसे आप ही वह पिया है।

उपहार

साजन! आपका दीदार,
हमारे लिए भला,
इससे बेहतर होगा और
कौन सा उपहार।

डॉ. मोनिमा चौधरी, नलबारी, आसाम

क्या आप जानते है

क्या आप शरीर में तिल होने के लक्षणों को जानते है

१. मत्थे पर हो तो धनवान बनोगे
२. मत्थे के दाहिने तरफ हो तो मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी।
३. ठुड्डी में तिल हो तो स्त्री से प्रेम न रहेगा।
४. दाहिनी आंख पर हो तो स्त्री से प्रेम बढ़ेगा।
५. बार्यी आंख पर हो तो स्त्री से कलह रहेगा।
६. दाहिने गाल पर हो तो धनवान बनोगे।
७. बांये गाल पर हो तो खर्च बढ़ता जाएगा।
८. होठ के नीचे हो तो गरीबी बनी रहेगी।
६. गर्दन पर हो तो आराम मिलेगी।
१०. दाहिनी भुजा पर है तो आप झगड़ालू होंगें।
११. दाहिनी छाती पर है तो आपका स्त्री से प्रेम रहेगा।
१२. दोनों छाती के मध्य है तो आपका जीवन सुखी रहेगा।
१३. हृदय पर हो तो आप बुद्धिमान होंगें।
१४. पेट के मध्य में हो तो आप डरपोक होंगे।
१५. दाहिनी हथेली पर होगा तो आप धनवान होगें।
१६. बांयी हथेली पर होगा तो खूब धन खर्च करेंगें।
१७. दाहिने पैर पर हो तो आप बहुत बुद्धिमान है।
१८. यदि बायें पैर में है तो आप अधिक धन खर्च करेंगे।

क्या आप जानते है छिपकली गिरने पर क्या होता है

१. सिर पर गिरने से राज्य की प्राप्ति होती है।
२. कपाल पर बन्धु दर्शन होता है।
३. कानों पर विशेष लाभ होता है।
४. नेत्रों पर बंधन होता है।
५. दाहिनी भुजा में राज्य सम्मान होता है।
६. बायीं भुजा में राजभय होता है।
७. कण्ठ में शत्रु का नाश होता है।
८. स्तनों में दुर्भाग्य होता है।
६. उदर में शुभ होती है.

क्या आप जानते हैं छींकने पर क्या होता है

१. सामने एवं दाहिने छींक होना अशुभ सूचक है।
२. पीछे या बायें होना शुभ सूचक है।
३. यात्रा के समय सामने छींक होना अशुभ सूचक है।

श्याम किशोर सिंह, इलाहाबाद

पहेलिया ✍जे.बी.नागरत्नमा, कर्नाटक

१. एक छोटा मैदान, वहॅा नौ सफेद घोड़ा, एक काला घोड़ा, एक लाल घोड़ा, इधर-उधर जा रहा है एक सफेद घोड़ा टक्कर लगाता है सभी घोड़े तालाब में गिर जाते है? क्या है?

उत्तरः केर बोर्ड. (सफेद, काला, लाल,   घोड़ा)

मुद्दा

ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल समस्या एवं प्रयास

✍ एस.के.तिवारी, इलाहाबाद

यह सर्व विदित है कि जल जीवन का आधार है तथा स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ और सुरक्षित जल सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है. यह विडम्बना ही है कि जल सहित सभी प्राकृतिक सम्पदाओं से सम्पन्न भारत स्वतंत्रता के ६२वर्ष बाद भी अपने सभी नागरिकों को पेयजल जैसी आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है.

भारत के हजारों गांव आज भी किसी न किसी रूप में पेयजल की समस्या से ग्रस्त है. लगभग १०० वर्ष पूर्व भारत के वाइसराय 'लार्ड कर्जन' ने कहा था कि भारतीय अर्थव्यवस्था मानसून की विसात पर हर साल खेला जाने वाला जुआ है. यह बात आजादी मिलने के बाद भी एक वास्तविकता बनी हुई है. इतनी भारी संख्या में बिजली पम्पों के ऊर्जायन के फलस्वरुप सिचाई व्यवस्था पिछले तीस वर्षो में बेहतर हुई है और खाद्यान्न उत्पादन भी तीव्रता से बढ़ा है और भारत इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर चुका है. लेकिन इन प्रयासों के बावजूद भी केवल एक तिहाई कृषि योग्य भूमि के लिए भूमिगत जल दोहन द्वारा सिचाई व्यवस्था स्थापित हो पाई है. वर्तमान स्थिति यह है कि ४० प्रतिशत सिचाई आधारित कृषि भूमि से ६० प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादन होता है और बाकी बची ६० प्रतिशत कृषि भूमि से मात्र ४० प्रतिशत पैदावार होती है जिसका सारा दारमदार मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है.

पानी की खेती प्राचीन काल से ही हो रही है. तालाब गांव-गांव में हुआ करते थे. लेकिन आधुनिक युग में नलकूपों और पाइप लाइनों की वजह से हम इस उपयोगी प्रथा को भूला बैठे थे. पानी की कमी ने हमें झकझोर दिया और हमें जल संचरण प्रबंधन का महत्व एक बार फिर समझ में आनो लगा है. ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या वर्तमान समय में कई रूपों में विद्यमान है. जैसे-ऐसी ग्रामीण बस्तियां जहां एक भी पेय जल स्रोत उपलब्ध नहीं हे, ऐसी ग्रामीण बस्तियां जहां से पेय जल के स्रोत दूरी की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है तथा ऐसी ग्रामीण बस्तियां जहां पेयजल के स्रोत पूर्णतया स्वच्छ एवं सुरक्षित जल प्रदान नहीं करते है. स्वयंसेवी संस्थाओं, विश्व बैंक, अर्थशास्त्रियों एवं सरकार द्वारा समय-समय पर पेयजल की समस्या पर प्रकाश डाला जा रहा है. यह समस्या भारत के नगरीय क्षेत्रों सहित व्यापक ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या अधिक गहन हे.

> ■ भारत के हजारों गांव आज भी किसी न किसी रूप में पेयजल की समस्या से ग्रस्त है.
>
> ■ लगभग १०० वर्ष पूर्व भारत के वाइसराय 'लार्ड कर्जन' ने कहा था कि भारतीय अर्थव्यवस्था मानसून की विसात पर हर साल खेला जाने वाला जुआ है.

पंचवर्षीय योजनाओं में जन सुविधाओं पर प्रारम्भ से ही बल रहा है. इसलिए प्रथम पंचवर्षीय में ही ग्रामीण क्षेत्रों में पेय जल की अपर्याप्त व्यवस्था पर चिंता व्यक्त की गई थी. उस समय इस कार्य को पंचायती राज द्वारा पूरा कराने का कार्यक्रम था. इसके पश्चात तीन योजनाओं में ग्रामीण जलापूर्ति के लिए विशेष व्यवस्था नहीं की गई थी. पांचवी पंचवर्षीय योजना में पीने के पानी को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की गई. सातवीं योजना में सभी ग्रामों एवं नगरों में सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया. किन्तु सभी गांवो में जलापूर्ति का लक्ष्य सातवी योजना काल में प्राप्त नहीं हो सका.

पेयजल की व्यवस्था राज्य सूची का विषय है. अतः पेयजल उपलब्ध कराने और उसके प्रबन्ध का दायित्व मुख्यतः राज्य सरकारों पर है. राज्यों ने पानी की आपूर्ति और सफाई समस्याओं के निदान हेतु धीरे-धीरे जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभागों की स्थापना की. किन्तु साठ के दशक के मध्य में पता चला कि इस योजना से प्रमुख गांव ही लाभान्वित हो रहे हे, सुदूर एवं दुर्गम ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या के लिए कोई प्रयास नहीं हो पा रहा है. इस प्रकार राज्य सरकारों ने सीमित प्रयासों का व्यापक समस्या के समाधान में समुचित परिणाम न मिलने पर केन्द्र सरकार का ध्यान आकृष्ट हुआ. केन्द्र सरकार ने १९७२-७३ में एक 'त्वरित ग्रामीण जल आपूर्ति कार्यक्रम प्रारम्भ किया, जिसके अन्तर्गत समस्याग्रस्त ग्रामों में पेयजल की व्यवस्था करने के लिए राज्य सरकारों को शत प्रतिशत सहायता देने की व्यवस्था की गई. यह कार्यक्रम ३१ मार्च १९७४ तक जारी रहा, किन्तु १९७४ में न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत पेयजल की व्यवस्था को सम्मिलित कर लिये जाने के कारण त्वरित ग्रामीण जलापूर्ति कार्यक्रम स्थगित

कर दिया गया.

समस्या की गम्भीरता और शीघ्र समाधान की आवश्यकता का अनुभव करते हुए पेय जल की व्यवस्था हेतु एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम १९८६ में 'राष्ट्रीय पेयजल मिशन' की स्थापना के साथ प्रारम्भ हुआ. इस कार्यक्रम को आगे चलकर 'राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन' का नाम दिया गया. राजीव गांधी पेयजल मिशन ने ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की समस्या के समाधान हेतु जोरदार प्रयास प्रारम्भ किए गए. इस मिशन की स्थापना के बाद ग्रामीण क्षेत्रों को ऐसी बस्तियों और झोपड़ियों को इस कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया, जिन्हें अभी तक गांव नहीं माना जाता था. इसके लिए कई उपमिशनों का गठन किया गया. इसके अन्तर्गत फ्लूरोसिस नियंत्रण, गिनीवर्म उन्मूलन, पानी के खारेपन पर नियंत्रण और पानी के वैज्ञानिक ढंग से पता लगाने, जल सरंक्षण और भूगर्भ जल के स्तर को बनाए रखने के प्रयास सम्मिलित हैं. इसी प्रकार जलापूर्ति के लिए ५५ लघु मिशन भी काम कर रहे हैं. इनका उद्देश्य स्थानीय समुदाय और गैर सरकारी संगठनों के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों को लम्बी अवधि के आधार पर निरन्तर रूप से आपूर्ति सुनिश्चित कराना है.

प्रति २५० व्यक्तियों के लिए एक हैण्डपम्प अथवा पानी की टोंटी प्रदान करना मानकों में सम्मिलित है. दूरी के हिसाब से यह निश्चित किया गया है कि मैदानी क्षेत्रों में १.६ किमी. और पर्वतीय क्षेत्रों में प्रत्येक १००मी. क्षेत्रों की ऊंचाई के बीच पेयजल उपलब्ध हो. जल को स्वास्थ्य के लिए तभी सुरक्षित माना जाता है जबकि टायफायड, हैजा, गिनी वार्म आदि बीमारियों के कीटाणुओं से और रासायनिक प्रदूषणों से मुक्त हों.

सभी को पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य अभी भी दूर है. यह लक्ष्य ओर आगे न खिसके, इसके लिए सरकार, स्वयंसेवी संस्थाओं, प्रौद्योगिकी मिशन और पंचायती राज संस्थाओं को ईमानदारी से कार्य करना होगा. साथ ही हमारे समाज के हर नागरिक को पानी के अनावश्यक बहाव, सीमित उपयोग एवं जल के दुरुपयोग को अपनी इच्छा एवं विवेक से रोकना होगा ताकि बचाया हुआ जल जरूरतमंद के काम आ सके. भविष्य में जल की उपलब्धता सभी के लिए सुनिश्चित हो सके.

▶ जल को स्वास्थ्य के लिए तभी सुरक्षित माना जाता है जबकि टायफायड, हैजा, गिनी वार्म आदि बीमारियों के कीटाणुओं से और रासायनिक प्रदूषणों से मुक्त हों.

▶ हमारे समाज के हर नागरिक को पानी के अनावश्यक बहाव, सीमित उपयोग एवं जल के दुरुपयोग को अपनी इच्छा एवं विवेक से रोकना होगा ताकि बचाया हुआ जल जरूरतमंद के काम आ सके.

मानवता कुलम्

मनुर्भव रिग्वेद रिचा स्तुति वाचन से, आदमी बनने का सुमार्ग दिखलाइए।
सुमनाभव यजुर्वेद मंत्रों के यजन से, मानसिक प्रदूषण को विश्व से भगाइए।।
सरस्वतन्तम् हवामहे सामवेद गावें साथ, प्रथकतावादियों को एकता सिखाइए।
मानवो मानवम् अथर्ववेद संहिता, मानव-मानव पाले प्रेरणा जगाइए।

कृपया अपने समीपस्थ धर्म स्थल को नाना-नानी के घर जैसा मानवता केंद्र बनाएं और 'विश्व साहित्य संसद' हेतु अपनी स्वीकृति प्रेषित करें. मानवता यज्ञ के कवि कुम्भ विजयादशमी सोमवार दिनांक २८.०६.२००६ को धनुषकोटि रामेश्वरम् में तीर्थ यात्री के रुप में सहभागी बनें।

मानवता कुलम मित्रता पंजीकरण शुल्कम् रु० १००/-

डॉ० उमा पाण्डेय
महासचिव, मानवता कुलम्
समन्वय कुटीरम्, ई-१०५२, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७

मुद्दा

सिर्फ तलाक़ कहने से नहीं टूटते सम्बंध

शाहिद ए. चौधरी,
समाज प्रवाह, मुंबई

बाम्बे हाईकोर्ट ने अपने एक महत्वपूर्ण फैसले में स्पष्ट किया है कि मात्र तीन बार 'तलाक' बोलकर कोई भी मुस्लिम पति अपनी पत्नी को तलाक नहीं दे सकता. न्यायाधीश बी.एच. मारलापल्ले ने तलाक से सम्बन्धित एक पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई के दौरान कहा कि तलाक से अलेग होने वाले दंपति को पहले पंचो की मदद से आपसी समस्या दूर करने का न केवल प्रयास करना चाहिए बल्कि यह कोशिश होते हुए स्पष्टतः दिखायी भी देनी चाहिए. यानी मौखिक या लिखित रुप से तलाक़ देने से पहले यह आवश्यक है कि वैवाहिक समस्या को हल करने के लिए पंचों का सहारा लिया जाए और पंच अपनी ओर से समस्या का समाधान की भरपूर कोशिश करें. पंच जब अपने प्रयास में विफल हो जाएं, तभी तलाक का रास्ता अपनाया जा सकता है.

मौखिक या लिखित रुप से तलाक़ देने से पहले यह आवश्यक है कि वैवाहिक समस्या को हल करने के लिए पंचों का सहारा लिया जाए और पंच अपनी ओर से समस्या का समाधान की भरपूर कोशिश करें

यह फैसला पूर्णतः कुरआन के अनुरुप के आदेशों के बहुत करीब है. साथ ही यह निर्णय एक ही बैठक में तीन बार तलाक़ कहकर पत्नी को असहाय स्थिति में धकेलने की सामाजिक कुरीति पर पाबंदी लगाता है और मध्ययुग का अन्यायपूर्ण परंपरा के तहत पति को मिले तलाक़ के 'एक्सक्लूसिव' अधिकार पर भी लगाम लगाता है.

लेकिन मुल्ला को बैर है उस बात से जो कुरआन के अनुसार हो या कुरआन के बहुत करीब हो. इसलिए वह बाम्बे हाईकोर्ट के इस फैसले का विरोध करा रहा हैं. उसके अनुसार यह फैसला शरिअत (मुस्लिम लॉ) और मुस्लिम वोमेन (प्रोटेक्शन ऑफ राईट्स ऑन डाइवर्स) एक्ट के खिलाफ है. मुल्ला का यह तर्क है कि तलाक़, तलाक़ होती है, भले ही उससे पहले पंचो की मदद से सुलह कराने की कोशिश की गयी हो या नहीं. वह यह भी कहता है कि इमाम अबु हनीफा ने तलाक़-उल-बिदअत (यानि एक ही बैठक में पति द्वारा तीन बार तलाक़ कहकर तलाक़ देने) का प्रावधान शरिअत में रखा है जिसे अब बदला नहीं जा सकता. मुल्ला का यह तर्क विरोधाभास से भरा हुआ है. सबसे पहली बात तो यह है कि तलाक़-उल-बिदअत का अर्थ है, तलाक़ का ऐसा प्रावधान जो दीन (धर्म) में नया है यानी जो पहले से मौजूद नहीं था. इससे स्पष्ट है कि तलाक़-उल-बिदअत का कुरआन से कुछ लेना देना नहीं है, यह शरिअत में नई बात है जिसे बाद में पुरूष प्रधान समाज के दबाब में ठूंसा गया है. दरअसल, शरिअत में बिदअत यानी नयापन दो प्रकार है. एक, बिदअते-हसना यानी ऐसा नयापन जो समाज की भलाई के लिए हो और कुरआन के स्थापित नियमों के खिलाफ न हो इसलिए वह स्वीकार्य हो. दो, बिदअते-सियाह यानी ऐसा नयापन जिससे समाज का कुछ भला न हो, जो कुरआन के स्थापित नियमों के विरुद्ध हो और इसलिए वह अस्वीकार्य हो.

तलाक़-उल-बिदअत वास्तव में बिदअते-सियाह है जिसे स्वीकार नहीं किया जा सकता. सबसे पहली बात तो यह है कि यह कुरआन के विरुद्ध है. स्वयं इमाम अबु हनीफा ने कहा था कि अगर मुझसे कोई ऐसी बात तुम तक पहुँचे जो कुरआन के विरुद्ध हो तो उसे उल्टा दीवार पर दे मारों यानी स्वीकार मत करों. दूसरा यह कि यह कुरआन के बुनियादी सिद्धांत मसावत (बराबरी) के खिलाफ है क्योंकि यह दाम्पत्य जीवन में बराबरी की बजाए औरत से उसके अधिकार छीनकर उसे दोयम दर्जे का हिस्सेदार बनाती है. अंतिम यह कि तलाक़-उल-बिदअत से समामज में कुरीतियां फैलती है. मसलन, जुलाई २००३ में उड़ीसा में शेख शेरू ने नशे की हालत में अपनी पत्नी नज़मा को 'तलाक-तलाक़-तलाक़' कहा और सुबह जब उसे होश आया तो उसे अपनी गलती पर पछतावा हुआ, लेकिन मजहब के ठेकेदारों ने साथ नहीं रहने दिया. जून २००५ में गायक रज़ा अली खान ने अपनी जर्मन पत्नी को खत में तीन बार तलाक़ लिखा और उसकी दुनिया विरान कर दी. मार्च, २००६ में जलपाईगुड़ी के आफताब अंसारी के मुंह से नींद में तीन बार तलाक शब्द निकल गया और मजहब के ठेकेदारों ने उनकी पत्नी सुहैला को उनसे अलग कर दिया. हद तो यह है कि अब टेलिफोन, ईमेल, एसएमएस आदि के जरिए भी तलाक दिया जाने लगा है.

इसी किस्म की कुरीतियों को मद्देनजर रखते हुए तकरीबन सभी मुस्लिम मुल्कों जिनमें पाकिस्तान, इंडोनेशिया, आदि शामिल है, ने तलाक़-उल-बिदअत

पर प्रतिबंध लगा दिया है. लेकिन समाज सुधार की जब ऐसी ही कोशिश बज़रिए अदालत द्वारा अपने देश में होती है तो मुल्लाओं की भृकुटियां तन जाती है. गौरतलब है कि बॉम्बे हाईकोर्ट ने कोई नया फैसला नहीं दिया है. वर्ष २००१ में बॉम्बे हाईकोर्ट की औरंगाबाद बेंच ने डब्ल्यू. पठान मामले में कुरआन के चाथे अध्याय की ३५वीं आयत को १७ बार उद्धत करते हुए कहा था कि तलाक़ से पहले सुलह के लिए पंचो का हस्तक्षेप आवश्यक है. इसी तरह सुप्रीम कोर्ट ने २००३ में शमीम आरा मामले में तलाक़ से पूर्व पंचो द्वारा सूलह के प्रयास का सबूत मॉगा था. अब अहमद खान, हनीफखान पठान बनाम दिलशाद बेगम मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट ने अपने ताजा फैसले से तलाक़ से पहले पंचो द्वारा सुलह के प्रयास को अनिवार्य बल्कि कानून बना दियाा है. ध्यान रहे कि कुरआन की सुरे निसा (आयत ३५) में कहा गया है कि अगर पति-पत्नी में सम्बंध तनावपूर्ण हो जाए तो तुम (जज या समाज) दो सालिस (पंच) नियुक्त कर दो, एक पत्नी के परिवार से और एक पति के परिवार से हो-यह सालिस हर संभव दोनों में सुलह कराने का प्रयास करें. ऊपर कहा गयाा है कि बाम्बे हाईकोर्ट का फैसला काफी हद तक कुरआान के अनुसार है. 'काफी हद तक' इसलिए कहा गया क्योंकि तलाक़ से पूर्व पंच नियुक्त करना तो कुरआन के अनुसार है लेकिन कुरआन पुरुष को तलाक़ देने का एक्सक्लूसिव अधिकार नहीं देता. तलाक़ देने का अधिकार सिर्फ न्यायालय को है, इस बात को बॉम्बे हाईकोर्ट ने मौजूदा फैसले में भी नजरअन्दाज कर दिया गया है.

अगर शरिअत का अर्थ अल्लाह द्वारा दिया गया कानून है, तो उसके दायरे में केवल कुरआन और जिस व्यक्ति पर कुरआन अवतरित हुआ यानि अंतिम पैंगम्बर मुहम्मद के कथन (हदीस) ही आते हैं. इस लिहाज से मुस्लिम पति को शरिअत में तलाक़ देने का एक्सक्लूसिव तो क्या, अधिकार हीं नही है. जस्टिस अमीर अली ने अपनी पुस्तक 'द स्प्रिट ऑफ इस्लाम' (पृष्ठ २४४) में लिखा है कि अंतिम पैगंम्बर मुहम्मद ने अपने जीवन के अंतिम दौर में पति द्वारा तलाक बिना सालिसों या काजी (न्यायाधीश) के हस्तक्षेप के नहीं होगी. इसी संदर्भ में मुहम्मद अली अपनी तफसीर (कुरआन की व्याख्या में लिखते है) पत्नी को तलाक देने का अधिकार पति को नही हैं. यह फैसला करना न्यायाधीश का काम है. (फैसले से पहले) न्यायाधीश के लिए जरुरी है कि वह दो सालिस नियुक्त करे, एक पत्नी परिवार से और एक पति के परिवार से. यह दोनों सालिस विवाद के असल तथ्यों का पता लगाएं और उनका उद्देश्य दोनों पार्टियों में समझौता कराना होना चाहिए. अगर समझौते की तमाम उम्मीदें नाकाम हो जाए तो तलाक़ की इजाजत हैं. लेकिन अंतिम निर्णय उस न्यायाधीश का होगा जिसके पास कानूनन तलाक देने का अधिकार हो. इस्लाम के शुरुआती दिनों में कुरआन के इसी निर्देश के अनुसार ही तलाक़ के मामले निपटाए जाते थे. इसलिए अगर हर तलाक बजरिए अदालत हो और सुलह के लिए पंचों की कोशिश भी अनिवार्य रहें तो न सिर्फ मुस्लिम समाज से कुरीतियां दूर हो जाएंगी बल्कि महिला को भी पुरुष के बराबर दर्जा मिल जायेगा और मुस्लिम लॉ भी कुरआन के अनुसार हो जाएगा.

मुहम्मद अली अपनी तफसीर (कुरआन की व्याख्या में लिखते है) पत्नी को तलाक देने का अधिकार पति को नही हैं. यह फैसला करना न्यायाधीश का काम है. न्यायायाधीश के लिए जरुरी है कि वह दो सालिस नियुक्त करे, एक पत्नी परिवार से और एक पति के परिवार से।

रचनाएं आमंत्रित है

राष्ट्रीय काव्य संकलन कैसे कहूं कि अपार सफलता के बाद कैसे कहूं के संपादक मंडल ने दूसरा राष्ट्रीय काव्य संकलन नुपूर नाम से प्रकाशित करने का निर्णय लिया है. इसमें इच्छुक कवि/गीतकार/शायर/ग़ज़लकार अपनी एक प्रेरणादायी रचना, संक्षिप्त सचित्र जीवन परिचय तथा दो सौ रुपये सहयोग राशि के साथ (केवल धनादेश ही स्वकीर्य) **संपादक, कैसे कहूं, ग्राम-कूंची, पो. टेमई का पुरा, मेजा, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश** के पते पर भेज कर ३० अक्टूबर २००६ तक भेज कर शामिल हो सकते हे.

संकलन में प्रकाशित कवियों में से संपादक मंडल द्वारा चयनित रचकारों को संकलन के विमोचन के अवसर पर होने कवि सम्मलेन एवं मुशायरे में आमंत्रित किया जाएगा. समयोपरान्त प्राप्त रचनाओं पर विचार नहीं किया जाएगा.

मुख्य

शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य

श्री कृष्ण गोयल, दिल्ली

शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है व्यक्तित्व का सर्वेतोमुखी विकास. मनुष्य को उच्च लक्ष्य निर्धारित करना चाहिये तथा अथक परिश्रम एवं प्रयत्न द्वारा उस लक्ष्य को पूरा करने के उपरान्त नया लक्ष्य निर्धारित किया जाये तथा उसे पूरा करने के उपरान्त नया लक्ष्य निर्धारित किया जाये तथा उसे पूरा किया जाये. इस प्रकार मनुष्य का जीवन निरन्तर नये लक्ष्य परिपूरित करने में लगा रहे जो कि अन्य व्यक्तियों के लिये प्रेरणा का स्रोत हो. प्रत्येक व्यक्ति में छिपी हुई अनन्त दिव्य शक्ति, दिव्य गुण तथा दिव्य ज्ञान विराजमान है उनको विकसित करना है. श्री माँ के निम्नलिखित शब्द नित्य स्मरणीय है-

लक्ष्यविहीन जीवन दुःखो से भरा जीवन है।

जो कुछ मनुष्य ने कर लिया है, उसके मुकाबले में बहुत कम है जो भविष्य में करना है.

पीछे की ओर मत देखो, आगे की ओर देखों, सदा आगे देखो तथा प्रगति करते रहो.

मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बन जाता है. सदा उच्च लक्ष्य निर्धारित करो, उस लक्ष्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प करो तथा सफलता के लिये परमात्मा से प्रार्थना करों. आपको अपना निर्धारित लक्ष्य पूरा करने के लिए दिव्य सहायता, मार्गदर्शन तथा बुद्धिमत्ता प्राप्त होगी. बिना उकताये तथा बिना थके, निरन्तर परिश्रम करना होगा. जब कभी थकावट महसूस हो, ध्यान करो, एकाग्रता का अभ्यास करो तथा दिव्य शक्ति के लिये सच्ची पुकार करो. कुछ मिनटों में, आप असीम शक्ति से भरपूर हो जायेगें. अपने समय का तथा मन का अच्छे से अच्छा प्रयोग करों. अपना समय गपशप में तथा निरर्थक बातों में नष्ट मत करो.

विद्यार्थी जीवन भविष्य के जीवन की नींव है. इस नींव को दिव्य शक्ति, दिव्य गुणों तथा दिव्य ज्ञान द्वारा मजबूत तथा सुदृढ़ बनाओ. मन को शान्त रखने की आदत डालो. जिस समय अध्यापक पढ़ाते हो, उन की बात को एकाग्रता से ध्यानपूर्वक सुनो, उस समय बातचीत नहीं करनी है तथा न ही शोर मचाना है. शोर मचाना तथा बातें करना मूर्खता तथा कमजोरी की निशानी है. जब एक पीरियड समाप्त हो, अगले अध्यापक के आने तक के समय में शान्ति का ध्यान करों. अपनी पाठशाला को शान्ति हो जायेगा.

कम से कम शब्दों में सार्थक बात करो. अधिक सुनो तथा कम बोलो. यदि कोई व्यक्ति कुछ बात कह रहा है, जो कि आपको पसन्द नहीं है या वह बात आपको पहले ही पता है, फिर भी उसकी बात को ध्यानपूर्वक प्रेम से सुनो. ऐसा करने से श्रोता में मानसिक एकाग्रता बढ़ती है तथा श्रोता एवं वक्ता के बीच अच्छे सम्बन्ध निर्मित होते हैं. संसारा के सब महान् पुरुषों में यह गुण था कि वे ध्यानपूर्वक अधिक सुनते थे, कम से कम सार्थक बात करते थे. कम बोलने के गुण को प्रयत्न द्वारा अर्जित करना चाहिये.

अपने माता-पिता तथा अध्यापकों का पूरी तरह से सम्मान करना चाहिये. माता-पिता तथा अध्यापक आपके वास्तविक शुभचिन्तक है.

अपनी सफलता में सम्पूर्ण विश्वास रखो जो कि अथक परिश्रम द्वारा प्राप्त होती है. पारितोषिक अवश्य मिलेगा, इसका समय किसी को नहीं मालूम. सदा परमात्मा की उपस्थिति महसूस करो. इसके द्वारा आप निर्भय रहोगे तथा आपके मन में घृणा, ईर्ष्या, क्रोध ा, शत्रुता आदि नकारात्मक वृत्तियां नहीं आयेगी तथा सदगुण उत्पन्न होगें. प्रत्येक व्यक्ति को अपने जैसा समझो. जब कभी मन में दूषित विचार आयें तो आंखे धीमे से मूंदकर ध्यान करें, आपका मन शान्त तथा हल्का हो जायेगा. भविष्य में प्रयत्न करके एसी मनोस्थिति बना लें कि विकार आये ही नहीं. समय पाकर अभ्यास द्वारा आपका अपने विचारों, भावनाओं तथा निम्न इच्छाओं पर आधिपत्य हो जायेगा. आपका व्यक्तित्व विकसित होगा तथा सूर्य की भाँति चमकेगा.

प्रगति की ज्योति बनो.

जीवन का प्रत्येक अनुभव, अच्छा या बुरा, हमारी प्रगति में सहायक हो.

प्रतिपल प्रगति करों.

सदा प्रसन्न रहो, प्रत्येक व्यक्ति का मुस्कुराहट के साथ स्वागत करों. जब कभी किसी के साथ गलत व्यवहार हो जाये तो सच्चे दिल से क्षमा याचना करो तथा भविष्य में ठीक व्यवहार करो. किसी के प्रति दुर्भावना मत रखों. इससे स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है तथा आपसी सम्बंध खराब होते है. अनुशासन में रहो तथा मार्गदर्शक स्वय बनों. अपने व्यक्तित्व को सुधारने के लिए अपने कड़े आलोचक बनों. दूसरों का मूल्यांकन कभी न करो तथा अपनी प्रतिक्रिया मत व्यक्त करों. सभी समस्याओं का उत्साह तथा प्रसन्नता से मुकाबला करो. प्रत्येक समस्या का समाधान समस्या के भीतर ही होता है. समस्याएं जीवन को सौन्दर्य प्रदान करती हैं तथा उसकी शोभा बढ़ाती है.

भ्रष्टाचार का मनोविज्ञान

✍डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, उरई, उ0 प्र0

आजादी मिलने के बाद से भारत में जब पूंजी निवेश एवं नियोजन प्रक्रिया प्रारम्भ हुई जिससे प्रशासन में नौकरशाही, व्यापार एवं प्रबधन एन० जी० ओ० तथा नेताओं में ऐसे वर्ग का विकास हुआ जिसमें पैसों के लेन-देन की संभावना एवं संख्या बढ़ने लगी । वर्तमान की बात करें तो आज भ्रष्टाचार देश की व्यवस्थों की रग-रग में बस गया है। व्यवस्था के अन्दर बैठे लोगों तथा व्यवस्था के बाहर बैठे लोगों ने इसे स्वीकार सा कर लिया है। राष्ट्रीय आचरण के रोम-रोम में व्याप्त, एक साधारण चपरासी से लेकर प्रथम श्रेणी के आफीसर, कर्मचारी, बाबू, क्लर्क, व्यवसायी नेता, मन्त्री आफिस के बाहर एजेन्ट, राजस्व विभाग के बाहर दुकादार या फिर थानों का बंधा हप्ता अर्थात् भ्रष्टाचार कहाँ नहीं है। जैसे तुलसी बाबा ने अपने राम की व्याप्त हर चर-अचर; सजीव-निर्जीव आदि में बताई है वैसे ही हमारे यहाँ भ्रष्टाचार ने वह स्थान ग्रहण कर लिया है। पहले तो भ्रष्टाचारियों को पकड़े जाने का भय होता था अब पकड़े नहीं जाने पर अफसोस जताते हैं। पकड़े गये तो हीरो। और यदि पकड़े गए नेता जेल गए तो मंत्री। अर्थात् आज भ्रष्टाचार ने सामाजिक सुचिता को शून्य पर ला खड़ा कर दिया हैं। ऐसी स्थिति में ईमानदार और सत्यवादी व्यक्ति कैसे जी पा रहे हैं, यह एक चमत्कार है। वर्तमान भारतीय समाज में भ्रष्टाचार अपने विकराल रूप में इस तरह फैल चुका है कि लगभग हर तीसरा व्यक्ति पैसा कमाने को ही महत्वपूर्ण मानता है उसके लिए साधन की पवित्रता कोई खास मायने नहीं रखती क्योंकि हमारे देश में भ्रष्टाचार अब सामाजिक आंतकवाद का रूप ले चुका है।

भारत विश्व के उन समृद्धतम देशों में एक है जो अपने प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों की दृष्टि से समृद्धि है फिर भी देश की गिनती विश्व के भ्रष्टतम देशों में होती है। हर वर्ष एक से बढकर एक घोटाले विश्व में भारत की छवि को निरन्तर धूमिल करते रहते हैं। सरकारें भी भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा पाने में अक्षम साबित हो रही हैं। इसके साथ ही यह भी एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि शुरू में जब मामला प्रकाश में आता है तो उसे खूब प्रचारित-प्रसारित किया जाता है लेकिन उसके बाद या तो वे मामले जाँच के ठंडे बस्ते में चले जाते हैं या वर्षों न्यायालय में लंबित हो जाते हैं। एक निश्चित समय के अन्दर भ्रष्टाचारी को कानून के शिंकजे में न कस पाना दुर्भाग्यपूर्ण है। इससे दुःखद दूसरा विषय है कि अभियोजन की अनुमति लेने में ही लंबा समय व्यतीत हो जाता है। इसमें तीसरा संकट तब उत्पन्न हो जाता है जब अभियुक्त राजनेता, बड़ा अधिकारी या उंचे रसूख वाला है तो उस पर मुकदमा चलाने की अनुमति लेने में अदालतों को वर्षों लग जाते हैं। अध्ययन एवं सर्वेक्षण यही बयान करते हैं कि अल्पमत की सरकारें भी ऐसा कोई रिस्क नहीं लेना चाहती क्योंकि उन्हें हमेशा गिरने का भय सताता रहता है इसलिए ऐसे कठोर कदम उठाने में वे परहेज करती हैं जो उनकी पार्टी गठबन्धन के विरूद्ध जाए! आज देश में भ्रष्टाचार फैलने की सबसे प्रमुख वजह नौकरशाहों का स्थानांतरण और निलंबन/ऊंचे और जिम्मेदार पदों पर बैठे अधिकारी इनसे बचने के लिए अपने नेताओं, मंत्रियों की बात मानने के लिए बाध्य होते हैं। यदि अधिकारी झुकते नही तो औरैया का इंजीनियर हत्याकाण्ड हो जाता है और झुक गये तो उत्तरोत्तर भ्रष्टाचार की वैतरणी में उतरते चले जाते हैं। भरतीय राजनीति में यह चौकानें वाली बात है कि देश में ८०० से अधिक सांसदों की संपति का ब्यौरा एक हजार करोड़ रूपये से भी अधिक है। औसत रूप में इसे मूल्यांकित किया जाए तो यह एक करोड़ से भी अधिक प्रति सांसद का पड़ता है. हम एक प्रश्न यहाँ करना चाहते हैं कि इन भद्र पुरूषों से पूछा जाए कि आखिर कहाँ से आया इतना पैसा इनके पास? और अभी तक इसकी जाँच क्यों नहीं हो पाई? और भारतीय जनमानस में इसे कितने लोगों के द्वारा कितनी गम्भीरता से लिया जा रहा है?

भ्रष्टाचार रूपी इस महामारी का अन्त कैसे हो इस पर आज शिद्दत के साथ चिंतन एवं मनन की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना हम सब का सर्वोपरि कर्तव्य होना चाहिए और इसके लिए हमारी दृष्टि आज की नव-युवा पीढ़ी, शिक्षाविदों और शिक्षार्थियों पर अधिक जाती है। वर्तमान यही लोग हैं जो भ्रष्टाचार रूपी दुराचार को मिटाने में सक्षम, समर्थ और सशक्त हैं। और इसके साथ ही जनसामान्य के लिए आवश्यक है कि वे भ्रष्टाचार के

विरोध में एक जबरदस्त लोक मत उत्पन्न करें, इसके साथ ही न्यायिक व्यवस्था में सक्रियता के साथ-साथ लोकपाल व्यवस्था को लागू किया जाए और भ्रष्टाचारियों को कड़ा दण्ड देने की व्यवस्था होनी चाहिए। चुनाव प्रक्रिया में मूलभूत परिवर्तन किए जाएं जिससे उम्मीदवारों को अधिक राशि व्यय न करनी पड़े । सूचना के अधिकार को प्रभावी बनाए जाए। राजनीति में भ्रष्टाचार दूर करने का एकमात्र रास्ता जनप्रतिनिधि ा कानून में संशोधन प्रमुख है। सरकारी प्रशासकों एवं मंत्री (नेताओं) जी लोगों के लिए एक निश्चित आचार संहिता का निर्माण सुनिश्चित होने के साथ-साथ इसका कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। यहाँ एक बात हम स्पष्ट करना चाहेगें कि जब तक भ्रष्टाचार की समस्या को आम लोगों की मानसिकता से नहीं जोड़ेगें तब तक इस विशाल दानव से निजात नहीं पाई जा सकती हैं। अर्थात् वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भ्रष्टाचार के इस मनोविज्ञान को एक राष्ट्रीय चरित्र के रूप में अपनाए जाने की आज शिद्दत के साथ आवश्यकता है।

हिंदुस्तान हमारा

आओ, हम सब मिलकर गायें, भाव में भर यह गीत।
जात, धर्म और वर्ग पर होवे, मानवता की जीत।
दसों दिशाओं में गुंजित है, गौरवगान हमारा,
सारे जहां से अच्छा प्रियवर, हिंदुस्तान हमारा।।

संत-महात्मा महिमा गायें, देव दरस को हर पल आएँ।
आओ, हम उस देवभूमि की, माटी अपने शीश लगाएँ।
वेद-पुराणों में स्तुति है, उस धूलि को नमन् हमारा,
सारे जहां से, अच्छा प्रियवर, हिंदुस्तान हमारा।।

सत्य-धर्म का महका चंदन, न्याय-नीति का है अभिनंदन।
मानवता और दया-नेह का, हर अंतर्मन में अभिनंदन।
उस माटी की पूजा में हम, अर्पण कर दें जीवन सारा
सारे जहॉ से अच्छा प्रियवर, हिंदुस्तान हमारा।।

काश्मीर, दास, कारगिल, सब में आन हमारी
पर्वत, नदियों, वनों में बसती, अनुपम शान हमार्र
विविध वेशभूषा-संस्कृति में, एकता गान हमार
सारे जहां से अच्छा प्रियवर, हिंदुस्तान हमार।।

ज्ञान और विज्ञान में अव्वल, लोकतंत्र के हम संरक्षक।
कला-खेल में हरदम आगे, जीवन-मूल्यों के हम वाहक।
शान हिमालय, आन हिमालय, हर सपूत ने अब हुंकारा,
सारे जहां से अच्छा प्रियवर, हिंदुस्तान हमारा।

प्रो० शरद नारायण खरे, मण्डला, म.प्र.

पढ़कर हंसना मना है

जे.बी.नागरत्नमा, कर्नाटक

१. शिक्षकः कन्नड़ भाषा के अभिमानी कौन है?
विद्यार्थीः अंग्रेजी में फेल होते हैं न वही कन्नड़ाभिमानी।

२. होटल जाकर कीलु पूछा-आज बनाये हुए पूरी है क्या?
माणि- आज का क्या कल को भी देने के लिए बनाये हैं दे दूं.

3- आधी रात को बेडरुम से ड्राईंग रूम तक संता को टहलते देख श्रीमती संता ने पूछा-'क्यॉजी, क्या हो गया, जो रात में इस तरह परेशान से घूम रहे हो.'
संता-'याद है, जब मैं शादी का प्रस्ताव लेकर तुम्हारे पिताजी के पास गया था, तो उन्होनें कहा था कि यदि मैंने तुमसे शादी करने की हिम्मत की, तो वह मुझे उम्र-कैद करा देंगें.'
'हॉ! याद तो है. पर अब इस बात से क्या लेना-देना?'
'अरे! अब जाकर तो समझ में आया है कि उम्र-कैद ज्यादा बेहतर थी.'

४. संता ठेकेदार ने बंता मजदूर को सड़क के बीच में सफेद लंबी पट्टी खींचने के काम पर लगाया. बंता ने पहले दिन पांच किलोमीटर लंबी पट्टी बनाई, दूसरे दिन तीन और तीसरे दिन सिर्फ एक किलोमीटर लंबी पट्टी ही बना पाया. इस पर संता ठेकेदार ने उसे डांट लगाई-'तुम तो कामचोरी करने लगे. रोज तुम्हारे काम की मात्र घटती जा रही है.
ऐसे काम कैसे चलेगा?
बंता-'क्या करूं साहब! रंग के डिब्बे से मेरी दूरी भी तो रोज बढ़ती जा रही है.'

५. मोटेराम एक शहर घूमने गए. वहां प्लेटफार्म पर रखी वजन करने वाली मशीन पर लिखा था-'मैं आपका वजन कर सकती हूँ. कृपया रुपया डालिए.' मोटेराम उस पर चढ़ गए और रुपया डाला. मशीन से फौरन कार्ड निकला, जिस पर लिखा था-'सावधान! कृपया एक-एक करके खड़ें हो, एक साथ नहीं.

कहानी

परिवर्तन

✍ डा० रामलक्ष्मी शिवहरे,
जबलपुर, म.प्र.

मॉ...कक्कू मॉ के पास रसोई में आकर बोला. मॉ उस समय शब्जी काट रही थी उन्होंने मुंह उठाकर पूछा क्या बात है? बेटा क्या चाहिये? उस समय उनकी दोनों आंखो में जल भरा हुआ था क्योंकि उस समय वो प्याज काट रही थीं.

मॉ नवीन के घर इतनी सारी चीजें है अपने घर में क्यों नहीं?

उसके पिता ज्यादा कमाते हैं इसीलिये ज्यादा चीजें होंगी पर तुम्हें उससे क्या लेना-देना?

मॉ वह हमेशा मुझ पर धौंस जमाते रहता है. कभी अपने खिलौने दिखा कर और कभी कार में स्कूल जाकर.

पर तुम उसकी धौंस में आते ही क्यों हो जरूरी तोा नहीं तो चीज उनके पास हो वह हमारे घर भी हो.

मॉ हमारे घर भी वे सब चीजें होती तो कितना मजा आता.

तुमने कभी नितिन के बारे में सोचा है?

वह जो अपने घर के पीछे रहता है टूटी झोपड़ी. अरे उसके बारे में क्या सोचना स्कूल में हमेशा डांट खाता है उसके पास यूनिफार्म नहीं है न. मॉ वह तो आपने मेरी ड्रेस दी तबसे उसका डांट खाना बंद हुआ.

तो बस यह समझ लो बहुत सारी चीजें बहुतों के पास नहीं होती हमें हमेशा उतने में ही संतोष रखना चाहिये जो हमारो पास हो.

मॉ तुम कितनी अच्छी हो....कहकर वह मां के गले से झूल गया था.

अब जाओ कल का काम कर लो नहीं तो स्कूल में गुरूजी को डांट खाआगे.

क्या करें वह बच्चों को कैसे संतुष्ट करें आज की दुनिया भाग रही है और प्रशांत है कि अभी भी सिद्धातों को लेकर जी रहे हैं.

वह हमेशा उलझती रही हैं उससे कि और लोग किस मजे से ऊपरी कमाई कर लेते हैं आखिर थाने का हवलदार कम तो नहीं होता यह अलग बात है प्रशांत के नाम से चोरो से लेकर साहूकार तक कांपते हैं.

जो मजा ईमानदारी से काम करने में आता है वह रिश्वत लेकर नहीं. कादम्बिनी मेरी इस बात को गांठ बांध ा लो चोर कभी न कभी अवश्य पकड़ा जाता है और सत्य किसी के सामने झुकता नहीं.

केवल बातों से तो हम अपने बच्चों को संतुष्ट नहीं कर सकते उनकी मांग भी तो पूरी करनी पड़ती है.

आवश्यकता कभी समाप्त नही हुआ करती वह तो और, और सुरसा की तरह बढ़ा करती है.

तभी पड़ोस के घर से कुछ शोर की आवाज आ रही थी,

मॉ., मां नवीन के घर इतनी सारी पुलिस क्यों आयी है?

कादम्बिनी ने खिड़की से झांक कर देखा तो सचमुच उसे भी बहुत सारे पुलिस के आदमी दिखे इनमें से बहुत लोगों को वह जानती भी थी.

देखो प्रवीण तुम्हें हमेशा दूसरों की चिंता रहा करती है आए होंगे वे किसी काम से अब तुम जाओ हाथ पैर ध ोकर पढ़ने बैठ जाओ.

हां, मां पिताजी भी आते ही होंगे कहकर कुक्कू पढ़ने बैठ गया था.

थोड़ी देर बादा ही नवीन की मॉ आई थी, आप नवीन को अपने पास रख लीजिये उन्होंने कादम्बिनी से कहा था मैं नहीं चाहती बच्चे मन पर दुष्प्रभाव पड़े और नवीन और उसकी छोटी बहिन शीतल को वह उनके घर छोड़ गयी थी. नवीन ने रो-रोकर आंखे सुजा ली थी और शीतल छोटी थी अतः कुछ समझती नहीं थी.

कादम्बिनी ने खाना बनाने के बाद सब बच्चों को खानाा खिलाया और सुला भी दिया उस दिन बहुत रात को प्रशांत आये. बहुत थके हुए थे कपड़े बदलने के बाद उन्होंने चाय पी और पूछा कुक्कू सो गया.

बहुत देर तक आपकी राह देखते बैठा था अभी ही जाकर सोया है. खाना लगाऊँ?

रात बहुत हो गई है और भूख भी कुछ खास नहीं. पर चलो थोड़ा बहुत खा ही लिया जाए. कहकर वे हाथ ध ोने चले गये थे.

दोनों ने थोड़ा बहुत खाया और कादम्बिनी बरतन समेटने चली गयी. प्रशांत कुक्कू के कमरे में गए तो वहां नवीन और शीतल को देखकर हैरान हो गए.

क्या इनके माता-पिता कहीं बाहर गये हैं?

नहीं, उनके घर रेड पड़ी बहुत सारा सामान और नवीन के पिता को भी आपके महकमें के लोग ले गये हैं.

अरे आज दिन भर तो मैं शहर से ही बाहर था. इसलिए मुझे कुछ बताया नहीं और मुझे पता भी नहीं चला.

नवीन की मां कहा हैं?

पता नहीं बच्चों को छोड़कर जब से गई है आयी ही नहीं उन्हें लेने. चलो चलकर देखते है पड़ोस का मामला है. कहीं हमारे जाने का वे बुरा न मान जायें? और फिर आप भी तो पुलिस के ही आदमी है.

यदि वे ऐसा सोचती तो क्या अपने बच्चे तुम्हारे पास छोड़ती? सबसे पहले हम पड़ोसी है और एक-दूसरे के सुख-दुख में काम नहीं आए तो वह पड़ोसी ही क्या.

रात के ग्यारह बज रहे हैं अब तक वे सो भी गयी होंगी.

मुझे सुबह बिलकुल समय नहीं उनके घर में लाइट तो दिख रही है. ये

खिड़की से देखते हुए बोले.
जब उनके घर गये तो वे जाग रही थी. हमें देखते ही बोली-मैं बच्चो को लेने आने ही वाली थी पर फिर सोचा इतनी रात गये....
रस्तोगी साहब कहां है?
जी ये तो अपने वकील से मिलने गये है. आइए बैठिए.
थोड़ी देर बाद ही रस्तोगी आ गये. बड़े परेशान से लग रहे थे. आते से ही पुलिस के ऊपर बरस पड़े यह भूल कर कि प्रशांत भी पुलिस का ही एक हिस्सा है.
दो चार चीजें क्या हुई कि लोगों की आंखो में खटकने लगती है. अरे हम केवल नौकरी के ही मत्थे नहीं गाव में हमारी जायदाद है.
प्रशांत देर तक सुनते रहे तो अब हम चलें, मेरे लायक कोई काम हो तो बताइएगा कहकर वे उठ गये थे.
मैं तो आपको पहले ही मना कर रही थी वहां जाने. वे गलत अर्थ भी ले सकते हैं.
मैं पुलिस की वर्दी में तो गया नहीं था एक पड़ोसी के नाते गया था. छापा पड़ने से वे परेशान है. अभी हमें उनकी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिये.
दूसरे दिन जब ये थाने से आये तो इन्होनें बताया कि एक सेठ ने रस्तोगी साहब की शिकायत कर दी थी. सेठ नियम से टेक्स पटाया करते थे किंतु वे उन्हें हमेशा तंग किया करते थे बस परेशान होकर सेठ ने उनकी शिकायत कर दी. सभी के पास रिश्वत देने के लिए फालतू पैसा तो होता नहीं बस वे सेठ से उलझ पड़े थे कुछ दिनों पूर्व ही सेठ ने उन्हें गलीचा दिया था बस उसी की तहकीकात करने पुलिस आयी थी.
मुझे भी यह सब बताया नहीं गया, लोगों को शक था कि पड़ोसी होने के नाते मैं उन्हें सूचित न कर दूं.
मोहल्ले में लोग दबे-दबे स्वर में बाते करतें. मैं सोचती अच्छा है न हुई न चार चीजें पर लोगों को सता कर तो अपना घर भरने से अच्छा बिना चीजों के ही गुजरा करना है कम से कम इज्जत तो हैं.
क्या सोच रही हो कादम्बिनी?
सोच रही हूँ आज कुक्कू ने नहीं पूछा मॉ हमारे घर इतनी सारी चीजें क्यो नहीं?
वह भी समझ गया होगा कि ज्यादा चीजें न होना ही ज्यादा अच्छा है.
शाम को नवीन आया तो मैंने उसे कुक्कू के साथ बिस्किट खाने को दिए. नवीन की आंखे भर आयी.
क्या बात है बेटे तुम रो क्यों रहे हो?
आंटी आप रीतेश को जानती हैं न? वही जो यहां से कुछ दूर पर रहता है.
हां बेटे बस देखा भर है उससे कभी मिलना नही हुआ.
जब तक हमारे घर पुलिस नहीं आयी थी रोज का उठना-बैठना था, आज मैं उनके घर गया तो जानती हैं उसकी मम्मी ने क्या कहा?
मैं समझ गयी थी उन्होंने जरुर ऐसी बात कही होगी जिससे बच्चे का मन दुख ाया है पर बच्चों का क्या दोष? इसमें बड़े करें और बच्चे भुगतें.
रहने भी दो हर समय जो कल हुआ उसी को लेकर तो सोचा नहीं जा सकता पर इतना समझ लो मॉ-बाप जो भी करते हैं वह बच्चों के लिए इसीलिए हमेशा अपने माता-पिता से हमेशा कुछ-न-कुछ नहीं मांगना चाहिये है न कुक्कू.
जी मां. यह तो मैं कल नवीन के आंसू देखकर ही समझ गया था. हमारी परसों से परीक्षा है क्या अब हम पढ़ने जायें?
जाओ और अपने साथ नवीन को भी पढ़ने बैठाओ जिससे यह भी परीक्षा में अच्छे नंबर पा सके.
नवीन कुक्कू के साथ पढ़ने चला गया था. और मैं चाय के प्याले उठाते हुये रीतेश के बारे में सोच रही थी जिसके पिता के बारे में यह प्रसिद्ध था कि वे रिश्वत पहले लेते हैं काम बाद में करते हैं वह तो उनके मामा नीति के पहुचे हुए व्यक्ति है इसीलिये उनकी शिकायत करने पर भी केस फाइल कर दिया जाता है.
मेरे मन में यह परिवर्तन आ चुका था कि हमेशा उतनी ही चीजों की मांग करना चाहिये जितना पति ईमानदारी से पूरी कर सके नहीं तो पति-पत्नि के साथ बच्चों को भी अपमानित होना पड़ता है.

गीतिका

वो दिन गये जब मलमल पहना करते थे,
फूलों के गॉव में नित टहला करते थे
सूरज आता और न जाने कब चला जाता
बचपन से मिलकर चरभर खेला करते थे
सुना करते थे दादी से परीकथायें
देखकर शेर सपनों में दहला करते थे
सुन-सुन सवाल अटपटे उकता जाते दादा
खिलाकर मखाने पिंड छुड़ाया करते थे
माखन खाते थे माधो भैया के संग
नंगे बदन आंगन में थिरका करते थे
खेत की गंध बुलाती रहती थी सदा
नागिन-सी चोटी में झूला करते थे
खुद नहीं देती थी अम्मा जब तक माहिर
ना कुछ खाते थे ना पहना करते थे।

<u>मुखराम माकड़ 'माहिर</u>, रावतसर, राजस्थान

कृपया पत्रिका की प्रति मांगते वक्त वक्त ५ रुपये का टिकट साथ में भेजना न भूले. अन्यथा पत्रिका मुफ्त नहीं भेजी जाएगी संपादक

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान सम्मानों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्र्तराष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष से निम्न सम्मानों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है:-

१.**साहित्य श्री सम्मान**-अप्रकाशित मौलिक एक कहॉनी तीन प्रतियों में, नगद राशि रु०३१००.००

२.**डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान**- अप्रकाशित एक नाटक तीन प्रतियों में

३.**बाल श्री सम्मान**-अप्रकाशित एक बाल कहॉनी तीन प्रतियों मे, नगद राशि- रु०११००.००

४.**कैलाश गौतम सम्मान**-अप्रकाशित एक हास्य/व्यंग्य रचना तीन प्रतियों में

५.**डॉ.किशोरी लाल सम्मान**- अप्रकाशित श्रृंगार रस पर आधारित एक रचना तीन प्रतियों मे

६.**प्रवासी भारतीय सम्मान**-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की सेवा कर रहे है. किसी भी विधा अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में

७.**अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान**-ऐसे विदेशी अहिन्दी भाषी नागरिक जो हिंदी की किसी भी प्रकार से सेवा कर रहे है. किसी भी विधा में एक रचना तीन प्रतियों में.

८.**राजभाषा सम्मान**-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारी जो अपने विभाग में हिंदी को बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

९.**सम्पादक श्री**-हिंदी में प्रकाशित पत्र/पत्रिका की नवीनतम तीन अंक

१०.**विधि श्री**-ऐसे विधिवेत्ता जो विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे है या हिन्दी की सेवा कर रहे है.

११.**डॉक्टरश्री**-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले हिंदी सेवी. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१२.**शिक्षक श्री**-शिक्षक पद पर रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१३.**सैनिक श्री**-ऐसे सैनिक जो देश की सेवा करते हुए हिंदी सेवा कर रहे है, किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में

१४.**विज्ञान श्री**-ऐसे विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है. सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१५.**प्रशासक श्री**- ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रशासकीय पद पर रहते हुए हिंदी की सेवा कर रहे है. किसी भी विधा में एक रचना तीन प्रतियों में

१६.**कलाकार श्री**-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेटिंग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में हिन्दी भाषा के माध्यम से सेवा कर रहे हो

१७.**सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-ऐसे व्यक्ति/संस्थाएं जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे है सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

१८.**बाल साहित्यकार सम्मान**-उम्र सीमा २१ वर्ष से कम, हिंदी की किसी भी विधा में एक रचना तीन प्रतियों में

१९.**पुलिस हिंदी सेवाश्री सम्मान**-पुलिस सेवा में रहते हुए हिंदी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना सहित तीन प्रतियों में

२०.**युवा पत्रकारिता सम्मान**-उम्र सीमा ४० वर्ष से कम, पत्रकारिता के क्षेत्र में गत पॉच वर्षो में किए गये कार्यो का सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

२१.**राष्ट्रभाषा सम्मान**-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए/हिंदी सेवा के लिए,

सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में

२२. दोहा श्री-अप्रकाशित मौलिक कम से कम २० दोहे तीन प्रतियो में

२३. ग़ज़ल श्री-अप्रकाशित मौलिक एक ग़ज़ल तीन प्रतियों में

२४.युवा कहॉनीकार सम्मान-उम्र सीमा ३५ वर्ष से कम, एक अप्रकाशित कहॉनी ३ प्रतियों में

२५.युवा व्यंग्यकार सम्मान-उम्र सीमा ३५ वर्ष से कम, एक अप्रकाशित व्यंग्य रचना तीन प्रतियों में

२६.युवा कवि सम्मान-उम्र सीमा ३५ से कम, किसी काव्य विधा में एक रचना ३ प्रतियों में

२७.विहिसा अलंकरण- लेख/ संस्मरण/व्यंग्य/ नाटक/ उपन्यास तीन प्रतियों मे

२८.राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान- हिन्दी साहित्य की सेवा करने के साथ ही साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, एक मौलिक रचना, अपने कार्यक्षेत्र का विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में

२६.राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान-उम्र सीमा ३५ वर्ष से कम, किसी भी क्षेत्र में हिन्दी के माध्यम से उल्लेखनीय सेवा कर रहे हो

साहित्य रत्न, साहित्य गौरव, साहित्य शिरोमणि संस्थान द्वारा स्वतः यानी बिना प्रविष्टि के प्रदान की जाएगी.

विशेषः

१. प्रत्येक सम्मान के लिए केवल एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा. जो सर्वोच्च्य होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

२. सभी प्रविष्टियों के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका भेजना अनिवार्य होगा. एक से अधिक प्रविष्ट्रियॉ भेजने पर जवाबी लिफाफा एक ही भेजना होगा.

३. प्रविष्टि के साथ २००/-रुपयें का धनादेश /बैकड्राफ्ट सचिव के नाम से भेजना होगा. इसे **युनियन बैक** आफ इंडिया की किसी शाखा में चेक के माध्यम से <u>'सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'</u> के नाम से खाता **संख्याः538702010009259** में जमा कर, चेक खातें में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ सलंग्न करनी अनिवार्य होगी.

४. सम्मान योजना शामिल सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी १० से लागू होगी. जो पहले से ही सदस्य हैं उनकी सदस्यता एक वर्ष के लिए बढ़ा दी जाएगी. एक विद्वजन के एक से अधिक प्रविष्टि होने पर भी एक ही वर्ष के लिए सदस्यता प्रदान की जाएगी.

५. पॉच से अधिक प्रविष्ट्रियॉ एक विद्वजन द्वारा भेजे जाने पर एक प्रविष्ट्रि, १० या १० से अधिक प्रविष्ट्रि भेजे जाने पर तीन प्रविष्ट्रि निःशुल्क रहेगी.

६. प्राप्त पुस्तकें/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. रचनाओं की मौलिकता को दर्शाना जरुरी है. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान के पास इनको हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' में प्रकाशन का पूर्ण अधिकार होगा. इसकी प्रति रचनाकार को अवश्य प्रेषित की जाएगी.

७. सम्मान किसी भी दशा में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. (विकलांग/अस्वस्थ होने पर आपके किसी प्रतिनिधि को, जिसके बारे में पूर्व सूचना कार्यालय को होगी को ही प्रदान की जाएगी.)

८. अपूर्ण प्रविष्ट्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा. अतः प्रविष्ट्रि भेजते समय यह सुनिश्चित हो लेवे की मांगी सम्पूर्ण जानकारी, सामग्री समाहित है या नहीं.

०६. सम्मान समारोह इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक आयोजन, सातवें साहित्य मेला में प्रदान किये जायेंगे. चयनित सभी विद्वजनों को डाक से/दूरभाष/ईमेल पर सूचना अवश्य दी जाएगी. संस्थान चयनित साहित्यकारों के लिए केवल आवास/भोजन की व्यवस्था ही करेंगा. यात्रा भत्ता देने की अभी संभावना नहीं हैं. संस्थान सभी आंगतुक साहित्यकारों के लिए रेलवे किराये में छूट हेतु व्यवस्था कर रहा है. जिसके लिए आपको कार्यालय से सम्पर्क करना होगा. प्रविष्ट्रियॉ निम्न पते पर भेजेः

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, मो० ६३३५१५५६४६,
email:sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः..........................सम्मान हेतु प्रविष्टि।

संदर्भः

महोदय,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले ....सम्मान हेतु मैं अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहा हूँ. मेरा विवरण निम्नवत है-

नाम :...

पिता/पति का नाम :...

पता : ....

....

दूरभाषा सं.:..मो०:...........................

शैक्षणिक योग्यताः (विस्तृत विवरण)

....

....

....

....

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः ....

प्रेषित प्रतियाः................................विधाः.......................................वर्षः............

अन्य साहित्यिक विवरणः ....

....

धनादेश/बैक ड्राफ्ट/डी.डी.का विवरणः राशि.................... बैंक का नामः................ बैक ड्राफ्ट/ डी.डी./धनादेश/जमा पर्ची का विवरणः..

मै शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूँ कि १. प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपी मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. २. मैंने संस्थान के पुरस्कार संबंधी नियम पढ़ लिए है और मैं उन्हें मान्य करता/करती हुं.

भवदीय

हस्ताक्षरः

पूरा नामः.................................

दिनांकः....................................

प्रस्तावक का पूरा नामः....................

पताः.......................................

....

दिनांकः...................................

हस्ताक्षरः

सलंग्नकः

१. सचित्र जीवन परिचय- एक प्रति
२. टिकट लगा पता लगा लिफाफा-दो
३. संबंधित रचनॉ/पुस्तक/पाण्डुलिपीः तीन प्रतियों में
४. धनादेश/बैक जमा पर्ची की छाया प्रति

व्यक्तित्व

भक्ति और रीत काल के मर्मज्ञ डॉ० किशोरी लाल

ईश्वर शरण शुक्ल, इलाहाबाद

साहित्य मनुष्य को जीवन जीना सिखाता है. असंभव को सम्भव बनाता है. व्यक्तित्व को निखारने के साथ समाज का नेतृत्व भी करता है. साहित्यकार का लक्ष्य केवल मनोरंजन का साधन जुटाना नहीं है. वह देश भक्ति और राजनीति के पीछे वाली सच्चाई नहीं बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई सच्चाई है. इन्हीं सच्चाइयों के मध्य औद्योगिक नगरी नैनी में रेलवे स्टेशन के समीप मुख्य बाजार में एक ऐसे साहित्यकार विगत छह दशक से अपनपी लेखनी के माध्यम से साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं जो स्वयं में अद्वितीय है.

भक्ति और रीति काल के मर्मज्ञ डॉ० किशोरी लाल का जन्म १ फरवरी १९३१ ई. को नैनी, इलाहाबाद में पिता मुसरिया दीन राठौर के घर हुआ. एकलौते पुत्र डॉ. कमल किशोर राठौर और तीन पुत्रियां हैं. पत्नी ज्ञान देवी का निधन १९९२ में हो जाने से डॉ. किशोरी लाल एकाकीपन भले ही महसूस कर रहे है लेकिन साहित्य लेखन की जीजीविषा अकेलापन महसूस नही होने देती. प्रारम्भिक शिक्षा नैनी और ईसीसी में करने के बाद उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राप्त किए. वर्ष १९६० से इंटर कॉलेज में अध्यापन कार्य शुरु करने के बाद १९७९ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर नियुक्त हुए. अध्यापन से सेवानिवृत्त होने के बाद स्वतंत्र रूप से जीवन को साहित्य लेखन के प्रति समर्पित कर दिए हैं. वर्ष २००४ में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय और लंदन विश्वविद्यालय में अतिथि आचार्य के रूप में अध्यापन हेतु जा चुके हैं. नैनी बाजार के संकरे से मकान में करीब पॉच हजार दुर्लभ पाण्डुलिपियों और बहुमूल्य पुस्तकों को उचित संरक्षण न मिल पाने के कारण नष्ट होने के कागार पर हैं. औद्योगिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध नैनी में विश्वस्तरीय यह साहित्यकार वर्तमान में भी रीतिकाव्य का दूसरा शब्द कोष तैयार करने में जुटा हुआ है. जीवन के आठवें दशक के करीब पहुँचने के बावजूद साहित्य पर हो रही राजनीति से अपने को बिल्कुल अलग पाते हैं.

उनकी साहित्यिक कृतियों पर लगभग १२ शोधार्थीयों द्वारा शोध कार्य करने के बाद मध्य प्रदेश के पूर्व पुलिस निदेशक पन्नालाल द्वारा उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर भी शोध किया गया. रीतिकाल और भक्तिकाल साहित्य का अनुवाद, सम्पादन, टीका, शोध और समीक्षा लिखने वाले डॉ. किशोरी लाल हिन्दी साहित्य के एक मात्र लेखक हैं. आपको विभिन्न संस्थाओं ने सम्मानित किया है, जिसमें हिन्दुस्तानी एकेडमी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, साहित्यकारा संसद, महादेवी स्मृति संस्थान, बृज मलानि संस्थान, मथुरा, केशव शोध संस्थान तथा दतिया, इंदौर, उदयपुर, भोपाल, उज्जैन विश्वविद्यालय आदि शामिल हैं. डॉ. किशोरी लाल को जीवन काल में जिन साहित्यकारों और आलोचकों का सानिध्य प्राप्त हुआ उनमें से प्रमुख रूप से डॉ. श्याम सुन्दर दास, मिश्र बन्धु में सुख देव बिहारी मिश्र, पं. कृष्ण बिहारी मिश्र, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हजारी प्रसाद, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. जगदीश गुप्त, डॉ. रामकुमार वर्मा आदि आलोचकों से प्रेरणा और आशीवर्चन प्राप्त हुआ. प्रकाशित पुस्तकों के रूप में रीति काव्य की मौलिक देन शोध कार्य, बिहारी काव्य की उपलब्धियां, बिहारी काव्य का नव मूल्यांकन, घनानंद-काव्य और आलोचना, सिन्दुरी सिंदूर (देव की रचनाओं का संपादन और व्याख्यान), रीति काव्य शब्द कोश सूर से के विशिष्ट पद (दो सौ पचास कठिन पदों की व्याख्या), विद्वन्मोद तरंगिणी (संपादन), आचार्य केशवदास कृत विज्ञान गीता (व्याख्या), जहॉगीर जस चंद्रिका केशवदास कृत (व्याख्या), वीर सिंह देव चरित केशवदास (व्याख्या), सूर और उनका भ्रमर गीत (व्याख्या), हिन्दी साहित्य का रेखांकन (रेवरेंड ग्रीब्ज कृत ए स्केच ऑफ हिन्दी लिटरेचर का हिन्दी अनुवाद), हिन्दी साहित्य का इतिहास (एफई के कृत ए हिस्ट्री ऑफ हिन्दी लिटरेचर का हिन्दी अनुवाद),रीति श्रृंगार मंजूसा, परमानंद काव्य और आलोचना मध्य कालीन काव्य पाठ और अर्थ विवेचना, गोप कवि कृतराम चन्द्रामरण, यशोदा नंदन, रचनावली, ग्वाल कवि कृति कवि दर्पण, हिन्दी रंगमंच और रामलीला तथा रीति कवि और समीक्षक शोध की नई दिशाएं आदि प्रमुख प्रकाशित ग्रन्थ है. हिन्दी रंगमंच और रामलीला तथा रीतिकवि और समीक्षक शोध की नई दिशाएं यह दो पुस्तक इसी वर्ष २००९ में ही इंदौर से प्रकाशित हुई है. साहित्य की जिस विधा पर डॉ. किशोरी लाल ने अपनी लेखनी चलाई है वह हिन्दी साहित्य के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा. रीतिकालीन काव्य साहित्य के जो गूढ़ छंदो और पदों की सरस व्याख्या प्रस्तुत किया है वह एक मिशाल है.

क्या आम आदमी स्वतंत्र हो पाया?

डॉ0 बी.एल. टेकड़ीवाल, मुंबई

हम कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभीः राष्ट्रकवि मैथिलीशरण स्वतंत्रता की ६१वीं वर्षगांठ अपने आप में एक महत्वपूर्ण घटना हैं. यह हमें आत्मावलोकन का अवसर प्रदान करती है कि हम रणबांकुरों व आजादी के मतवालों के बलिदान तथा जनआंकाक्षाओं पर कहां तक खरे उतरे. क्या आम आदमी तक स्वतंत्रता का फायदा पहुँच पाया? क्या जीवन की मूलभूत आवश्यकाताएं हम आदमी को मुहैया करा पायें? क्या हम गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, आर्थिक व सामाजिक विषमता, कुपोषण, भ्रष्टाचार, सिद्धात विहीन राजनीति तथा राजनीतिक अपराधीकरण से निजात दिला पाये? क्या गांधीजी द्वारा कल्पित रामराज्य सुलभ करा पायें? यदि नहीं, तो हमें इन सबसे आजादी पाने के लिए अनवरत संघर्ष करना पड़ेगा ताकि जनता जनार्दन को सर्वागीण आजादी तथा स्वस्थ प्रजातंत्र उपलब्ध करा सके तथा वैश्वीकरण व भूमंडलीकरण से उत्पन्न चुनौतियों का समाना कर सके और आम आदमी को बेहतर जीवन स्तर उपलब्ध करा सकें. इसके लिए कुछ सुझाव इस प्रकार है-

१. स्वदेशाभिमान जागरणः आज हम जातिवाद, लिंगवाद, क्षेत्रवाद तथा भाषावाद में बंटे हुए हैं और आत्मलिप्तता के कारण पहले खुद का स्वार्थ देखते हैं उसके बाद में देश का. जरुरी है कि प्रत्येक भारतीय के मन में पहले देश हित फिर स्वहित की भावना हो. अतः देश को यह नारा अपनाना चाहिए-पहले राष्ट्रहित फिर स्वहित. गौरव भाव जागृत करें.

२. लोकतंत्र के चारों स्तंभो का सशक्तिकरणः विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा प्रेस-लोकतंत्र के ये चारो स्तंभ आज लड़खड़ा रहे है जिससे जनतांत्रिक मुल्यों का अवमूल्यन हुआ है. सत्ता सेवा का माध्यम न होकर पैसा कमाने का माध्यम हो गयी है. बढ़ते अपराधीकरण, वंशवाद, अवसर वादिता तथा स्वार्थ के केंसर ने विधायिका को कमजोर बना दिया है. विधायिका का मुख्य उद्देश्य है कि प्रमुख ज्वलंत विषयों पर चर्चा करें और जनहित में कानून बनायें, लेकिन अति महत्वपूर्ण विधेयकों पर चर्चा होती ही नहीं है और कुछ ही मिनटों में दुर्गामी प्रभाव वाले विधेयक भी पास कर दिए जाते है. अनावश्यक मुद्दों पर बहस होती है, सदन का बहिर्गमन होता है. बहस का स्तर पर गिरता जा रहा है. संसद में बाहुबली व अमीरों का बोलबाला है. इसी तरह कार्यपालिका भी जनता जर्नादन से विमुख हो गयी है. बाबूओं का वर्चस्व बढ़ता जा रहा है. न्यायपालिका व प्रेस की भूमिका भी उतनी जवाबदायी नहीं रही.

३. विजयी प्रत्याशी के लिए ५१ फीसदी मत जरुरीः चुनावों में मतदान का प्रतिशत ५० फीसदी होता है और २५ फीसदी मत पाने वाला विजयी घोषित हो जाता है. ७५फीसदी लोग विजयी प्रत्याशी के खिलाफ है. जो लोकतंत्र के बहुमत के खिलाफ है. अतः यह जरुरी है कि विजयी प्रत्याशी को कम से कम ५१फीसदी वोट मिले.

४. राजनीतिज्ञों के लिए सेवानिवृत्ति- राजनीतिज्ञों के सेवानिवृत्त की उम्र भी तथा शैक्षणिक योग्यता निर्धारित होनी चाहिए.

५. युवा प्रतिनिधित्वःआज देश की पचास फीसदी आबादी युवा है. लेकिन युवाओं को नेतृत्व नहीं मिलता. अतः पुरानी मानसिकता त्यागकर राष्ट्रपति भवन, राजभवनों व अन्य जगहों पर युवाओं को अवसर दिया जाना चाहिए.

६. परिवारवाद को खत्मःआज सम्पूर्ण राजनीति परिवारवाद से भरी पड़ी है. जिससे अन्य योग्य व्यक्तियों को पद नहीं मिल पाते. राजनीतिक दलों में लोकतंत्र का अभाव है. इसे खत्म किया जाना चाहिए.

७. जातीय आरक्षण संघर्ष पेदा करते हैं तथा प्रतिभा को कुंठित करते है. आरक्षण का आधार आर्थिक होना चाहिए. प्रतिभाओं को निखारने के लिए जो संसाधन जरुरी हो वो उपलब्धा कराये जाने चाहिए.

८. तुष्टकीरण व वोट की राजनीति को बंद किया जाना चाहिए. संविधान की धारा ४४ में प्रस्तावित सामान्य आचार संहिता को तुरंत लागू किया जाना चाहिए.

९. स्वतंत्रता के ६१ साल बाद भी मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव है. आज भी लाखें गांवो में पीने का पानी व बिजली का अभाव हैं. इसका एक लक्ष्य निर्धारित कर मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जानी चाहिए.

१०. नैतिक पतन तथा मुल्य हास के कारण जीवन के हर क्षेत्र में मूल्य हीनता बढ़ी है, जिसके चलते भ्रष्टाचार व अपराध अपनी चरम सीमा तक पहुच गया है. जिसका खामियाजा आम आदमियों को भोगना पड़ता है. आज अपराध हंस रहा हे और नैतिकता रो रही है. आम आदमी विस्मय होकर अपने आपको उपेक्षित व असहाय महसूस कर रहा है.

अध्यात्म

कल्याणकारी भगवान श्री राम

✍ **देवदत्त शर्मा 'दाधीच'**, छोटी खाटुवाले, जयपुर, राजस्थान

रक्ताम्भाोज दलाभिरामनयनं पीताम्बरालकृंत श्यामाड्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्री सीतया शोभितम्। कारूण्यामृत सागरं प्रियगणै र्भ्रात्रादि भिर्भावितं।।

जिस समय संसार में दुराचार, दुर्विचार का परितः प्रसार होने लगता है अहिंसा, समय, अक्तेय, धैर्य, न्याय आदि मानवोचित सद्गुणों का अपमान होने लगता है, दैत्य दानवों से धरो व्याकुल हो जाती है, उस समय सर्वपालक भगवान सिी रूप में प्रकट होकर श्रुति-सेतु का पालन करते और अपने मनोहर मंगलमय परम् पवित्र चरित्रों का विस्तार करके प्राणियों के लिये मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं. इन्हीं सभी भावों को लेकर मधुमास के शुक्ल पक्ष की नवमीं को मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी प्रकट हुए.

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्-लोकाभि रामं श्रीरामं भूयो नमाम्यहम्।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरित मानस में परात्पर ब्रह्म भगवान नारायण के श्रीरामावतार की विस्तृत कथा है. नौमी तिथि मधु मास पुनीता' सुकाल पच्छ अभिजीत हरिप्रीता श्री रामजन्म चैत्र शुक्लपक्ष की नवमी तिथि का नाम 'श्री रामनवमी' हो गया. जन्म के समय अयोध्याजी में जो उत्सव मनाया गया था उसका वर्णन बहुत ही सुन्दर है. भगवान राम के मर्यादामय आदर्श जीवन की झांकी लोक शिक्षा तथा अध्यात्म का ज्ञान कराने वाली है. श्रीराम का आदर्श मानव के सच्चारित्र का आदर्श है जो अनुकरणीय तथा महान् कल्याणकारी है. श्रीराम का जीवन दृढ़व्रत का पर्याय है. भये प्रकट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी बाल्मीकी रामायण में श्री राम कहते है. सीते मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ, लक्ष्मण को छोड़ सकता हूँ, अपने प्राणों का परित्याग कर सकता हूँ-लेकिन जो मैंने प्रतिज्ञा की है उसे नहीं छोड़ सकता. राम सत्य पराक्रम वाले हैं. उनके प्राण भले ही चले जायें पर वे झूठ नहीं बोलते, सदा सत्य भाषण करते हैं-

दधान्न प्रति गृह्णीथात् सत्यं ब्रूयान्न चानृतम अमि जीवित हे तोहिं रामः सत्यपराक्रमः।।

श्रीराम के शरणागत वत्सलता और अभयदान दो दृढव्रत है. वे कहते है कि जो एक बार मेरी शरण में आकर यह कहते हैं कि मैं आपकी शरण में हूँ मेरी रक्षा करें- उसे मैं अभयदान दे देता हूँ. जब रावण के अत्याचार से प्रताड़ित श्री विभीषण जी जब श्रीराम की शरण में आयें तब उन्हें हृदय से लगा लिया.

श्रवण सुंजसु सुनि आयऊँ प्रभु भंजन भव भीर त्राहि त्राहि आरति हरन सुखद रघुवीर।

श्री रामजी का चरित्र समुद्र के समान है, उनकी कोई थाह नहीं पा सकता. श्रीराम के भजने से परम् गति प्राप्त होती है-गणिका, अजामिल, व्याघ, गीध ा, गज श्वपच आदि जो पाप रूप थे वे भी श्री राम का नाम लेकर तर गये. भगवान श्री रामचन्द्र जी अपने भक्त, भूमि, ब्राह्मण, गो और देवताओं के हितों के लिए मनुष्य शरीर धारण करके लीलाऐं करते हैं. **भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपालु। करत चरित धरि मनुष्य तनु सुनत मिटहिं जगपाल।।**

कलियुग में राम का नाम कल्पतरू और कल्याण का निवास है जिसका स्मरण करने पर तुलसी दास तुलसी के समान पवित्र हो गयें. भगवान शिव ने जब विष पान किया उस समय उन्होंने भगवान राम का ध्यान किया और विष अमृत बन गया. भगवान राम का नाम आपत्तियों में भी सभी प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करने वाला है.

मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुवीर।- अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भव भीर।

हे श्री रघुवीर मेरे समान कोई दीन नहीं हैं और आपके समान कोई दीनों का हित करने वाला नहीं है ऐसा विचार कर हे रघुवंशमणि मेरे जन्म मरण के भयानक दुःख का हरण कर लीजियें।

ये त्वां देवं ध्रुवं भक्ताः पुराणं पुरूषोतम्। प्राप्नुवन्ति तथा कामानिह लोके परत्र च।।

हे प्राण पुरूषोत्तम श्रीराम. जो लोग आप में भक्ति रखेगें तथा आपकी उपासना करेंगें, उनके लिये इस लोक तथा परलोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा. शुक्रचार्य ने अपनी नीतिसार में कहा है कि 'न राम सदृशों राजा पृथिव्यां नीतिमान भूतू.' राम के समान नीतिवान् राजा पृथ्वी पर न हुआ और न कोई होना सम्भव ही है. गोस्वामी

तुलसीदास जी ने रामचरित्र मानस में लिखा है-

नीति प्रीति परमारथ स्वारथु। कोई न राम सम जान जथारथु' राम का जीवन त्यागमय है. त्याग की मर्यादा स्थापित करके मर्यादापुरूषोत्तम के नाम से विख्यात हुए है.

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारूणं।

नव कंल लोचन, कजं-मुख, कर-कंज, पर कंजारूणं।।

श्रीराम भारत के प्रकाश है और भारत विश्व का प्राणाधार. राम-भारत और विश्व का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध व्यक्ति, समाज तथा विश्व के जीवन चरित्र के रूप में एक बार पुनः सब के सामने खड़े हैं श्रीरामचन्द्र जी सम्पूर्ण भारतीय जन मानस में अगाध श्रद्धा तथा मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में अधिष्ठित हैं. रामों विग्रह वान धर्मः' श्री रामचन्द्र जी धर्म के साक्षात विग्रह है. श्री राम माहन नीतित, परमार्थ एवं प्रीति विशेषज्ञ हैं भगवान राम का रूप मंगल धाम है. , मंगल करने वाला है. अमंगल हारी है.

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी। मानस में भगवान नाम का स्थान स्थान पर समाविष्ट किया है.

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रतनपाल भगवता

गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रित कतां।।

आज के राजाओं को भगवान राम के उपदेश से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये लक्ष्मण को कहते हैं कि न्याय के द्वारा धर्नाजन करना, अर्जित किए हुए धन व्यापार आदि द्वारा बढ़ाना, उसकी स्वजनों और परजनों से रक्षा करना. राजा का क्या कर्तव्य है इसके बारे में भगवान राम ने कहा-

आयद्वारेषु सर्वेषु कुर्यादाप्तान परीक्षितान्।

आददीत धनं तैस्तु भास्वानु स्त्रैरिवोदकम्।।

राजा मेघ की तरह सब प्राणियों का आजीविका प्रदान करने वाला हो. उसके यहॉं आय के जितने साधन हों उन सब पर विश्वस्त एवं परीक्षित किये गये लोगों को नियुक्त करें. जैसे सूर्य अपनी किरणों द्वारा पृथ्वी से शत्रु के प्रति किस प्रकार का व्यवहार हो उसके लिए भगवान राम कहते है-

साम दानं च भा`दश्च दण्डोपेक्षोन्द्र जालकम्।

मायोपायाः सप्र परे निक्षिपेत् साधनाय तान्।।

साम, दान, दण्ड, भेद, उपेक्षा, इन्द्रजाल और माया ये सात उपाय है. इनका उपयोग शत्रु के प्रति करना चाहिये. राजा को चाहिये कि वह अपने लिये सुख की इच्छा रखकर दीन दुःखी लोगों को पीड़ा न दें, क्योंकि सताया जाने वाला मनुष्य दुःख जनित क्रोध के द्वारा अत्याचारी राजा का नाश कर डालता है.

राजा को चाहिये कि वह अपने लिये सुख की इच्छा रखकर दीनः दुखी लोगों की पीड़ा न दे, क्योंकि सताया जाने वाला मनुष्य दुःख जनित क्रोध के द्वारा अत्याचारी राजा का नाश कर डालता है. राजा का कर्त्तव्य है कि किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करें, किसी को कष्ट नहीं पहुंचावे, सभी से मधुर वाणी बोलो, सत्य भाषण करें, सदाचार का पालन करे, दीनों के प्रति दयावान बनें. रामचरितमानस् में भगवान राम ने राजनीतिसार और उस की महिमा बताई है.

सेवक कर पद नयन से सुख सो साहिब होई।

तुलसी प्रीत की रीत सुनि सुकवि सराहहिं सोई।।

मुखिया मुख सो चाहिये खान पान कहूँ एक। पालड़ पोषड़ सकल अगं तुलसी सहित विवेक।।

२-३०६-३१५-३१६

आज के मंत्री परिषद यदि भगवान राम के मंत्री परिषद पर गहनता से विचार करें तो हम रोज लोकसभा व विधानसभा व अन्य परिषदों में जो देखते हैं उसका दर्शन नहीं होता.

ग़ज़ल

पत्थर को माना हमने भगवान तेरी ख़ातिर।
सहना पड़ा है कितना अपमान तेरी ख़ातिर।
सीने में घुट रहे हैं अरमान तेरी ख़ातिर।
कब तक रुके रहेंगे महमान तेरी ख़ातिर।
ऐ प्यार ज़िन्दगी में क्या मोह भर दिया है
मर मर के जी रहे हैं इन्सान तेरी ख़ातिर।
तेरा अंधेरा ऑंगन किरनो की रहगुज़र हो,
सूरज से मॉंगता हूँ वरदान तेरी ख़ातिर।
आ जा कि सारे कॉंटे मैने उठा लिये हैं
अब राह हो गयी है आसान तेरी ख़ातिर।
नइय्या तुझे भॅंवर से अब खुल के खेलना है,
आया खिलौने लेके तूफ़ान तेरी ख़ातिर।
आंखो के दर पे बैठे तेरे ही मुन्ज़र है।
ये अश्क बन गये हैं दरबान तेरी ख़ातिर।
अश्को को पी गये हैं, सूखे हुए लबों पर,
हमने सजाई है फिर मुस्कान तेरी ख़ातिर।
तेरे लिये क़लम का साधू बना है 'पंछी'
कुछ लोग बन गये हैं शैतान तेरी ख़ातिर।

✍सरदार पंछी, लुधियाना, पंजाब

उनका मंत्री मंडल विभिन्न योग्यता सम्पन्न मंत्रीयों से युक्त था.

चित्रकूट में भरतजी को राजनीति का उपदेश देते हुए कहते है कि 'यदि राजा हजार या दस हजार मूर्खो को अपने पास रख ले तो भी उसने अवसर पर कोई अच्छी सहायता नहीं कर सकता किन्तु यदि एक मंत्री शूखीर, चतुर, नीतिज्ञ और मेधावी हो तो वह राजा का, प्रजा का राज्य का, बड़ा हित कर सकता है.

अथ येषामघर्य ज्ञा राजा भवति नास्तिकः

न ते सुखं प्रबुध्यन्ति न सुखं प्रस्वपन्ति च

सदा भवन्ति चौद्विग्नास्तस्य दुश्चरितैनराः।

योग क्षेमा हि बहबो राष्ट्रं नास्याविशन्ति तत्।।

जिस राज्य का राजा धर्म को नहीं जानता, नास्तिक होता है वे लोग न तो सुख भोग सकते है न सुख से जागते ही है, आपत्ति उस राजा के दुराचार से सदैव उद्धिग्न रहते हैं. ऐसे राजा के राज्य में बहुधा योग क्षेम नहीं प्राप्त होते हैं.

जब राजनीति में धर्म का प्रवेश होता है तो राजनीति पवित्र हो जाती हैं और यदि धर्म में राजनीति प्रविष्ठ होती है तो धर्म अपवित्र हो जाता है जिस राजनीति में धर्म नहीं वह विनाश और अशान्ति की और ले जाती है. जो व्यक्ति धर्म, अर्थ और काम के लिये समय का विभाग करके सदा उचित समय पर उनका सेवन करता है, वही राजा श्रेष्ठ हे किन्तु धर्म तथा अर्थ का स्वांग करके केवल काम का सेवन करता है वह वृक्ष की अगली शाखा पर सोये हुए मनुष्य के समान है.

भगवान राम का जीवन चरित्र विभिन्न देशों में विभिन्न ग्रंन्थों में उनकी भाषा में लेखकों-कवियों, साहित्यकारों, ने लिखा है. चीन, तुर्किस्तान, तिब्बत, इण्डोनेशिया, थाईलैंड ला ओस, मलेशिया, कम्बोडिया, श्रीलंका, फिलीपींस, रूस, फ्रांस, वर्मा आदि देश है.

जहॉं तक राम-मन्दिर व रामसेतु की बात है तो ये हमारी प्राचीन संस्कृति की धरोहर है इस देश की संस्कृति, देश का स्वरुप, देश का स्वाभिमान है. इसकी रक्षा के लिये प्रत्येक भारतवासियों को अपना तन-मन-धन से सहयोग देना चाहियें. चाहे व किसी भी ध र्म-जाति का हो. भगवान राम का कोई एक विशेष जाति धर्म-भाषा के नहीं थे व प्रत्येक मानव मात्र के थे.

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतल।

तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति।

जब तक धरती पर नदियां और पहाड़ रहेंगे, तब तक इस लोक में राम कथा का प्रचार होता रहेगा।

प्रातः उठकर हथेली का दर्शन क्यों?

शास्त्रों में प्रातः काल आंख खुलते ही सर्वप्रथम हथेली-दर्शन का विधान अत्यंत आध्यात्मिक एवं प्रेरणादायक बताया गया है.

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती करमूले तु गोविंदः प्रभाते करदर्शनम।

हमारी हथेलियों के अग्रभाग में श्री लक्ष्मी का निवास है, मध्य भाग में विद्या एवं ज्ञान की देवी सरस्वती तथा मूल भाग में गोविंदा प्रातः हथेली दर्शन करने से इन तीनों देवजनों का दर्शन होता हैं. इनकी कृपा से सुख, सौभाग्य की प्राप्ति होती है, इसके अतिरिक्त हमारी हथेली में हर उंगली के मूल में जो उभार है जिसे हस्तरेखा विज्ञान के अंतर्गत पर्वत कहते हैं वे सभी नौ ग्रह है, तर्जनी के नीचे गुरु, मध्यमा के नीचे शनि, अनामिका के नीचे सूर्य, कनिष्ठा के नीचे बुध, अंगूठे की जड़ में शुक्र, बीच में मंगल, मणिबंध के ऊपर चन्द्र. इस तरह सभी नवोग्रहों के दर्शन-प्रणाम से जीवन ग्रहों के कुप्रभाव से बचा रहता है.

दूसरी बात यह है कि प्रातः आंख खुलते ही एकदम प्रकाश देखने से आंखों पर कुप्रभाव पड़ता है इसलिए धीरे-धीरे हथेली को समीप से देखने से आंख खोलने से तेज प्रकाश के प्रभाव से बचाव होता है.

भगवान वेदव्यास ने करोपलब्धि को मानव के लिए परम लाभप्रद माना है ताकि हमें सदैव कर्मठ रहने की प्रेरणा मिले, करतल में देव दर्शन करके अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करके हमारी वृत्तियां भगवन चिंतन एवं सद्कर्म की ओर प्रेरित रहें. हम शुद्ध सात्विक कर्मो की ओर से अग्रसर रहे, पराश्रित न रह कर विचार पूर्वक अपने परिश्रम से आजीविका कमाने की भावना रखें. प्रत्येक कार्य भगवद् कृपा ही समझे.

(साभारः दि मारल, हिन्दी साप्ताहिक, कानपुर, उ.प्र.)

पहेलिया

✍जे.बी.नागरत्नमा, कर्नाटक

आओ कहते हैं आते ही हाथ देते है, हाथ देकर रोते हैं. रोने के बाद पैसे देकर भेजते है, क्या बोलो?

उत्तरः चूड़ी पहनना

स्नेह बाल मंच

कहानी

संस्कार

✍ **उमा सोनी,** जबलपुर, म.प्र.

गणेशोत्सव का समय, मैं और मेरी छोटी बहन भोग के लिए लड्डू लेने जा रहे थे. रास्ते में मुहल्ले के चाचाजी अपने घर से निकले. वे न मालूम किस धुन में चले जा रहे थे. शायद उन्हें किसी तनाव ने घेर रखा था. वे अपनी उधेड़ बुन में लगे रहे खुद ही सवाल करते, खुद ही जबाब देते. धीरे-धीरे उनका चेहरा पसीने से तर हो गया. पसीना पोंछने को उन्हेंाने ज्यो ही रुमाल निकाला, नोट भी उसके साथ निकल कर सड़क पर बिखर गये. उन्हें रुपये गिरने का आभास ही नहीं हुआ. चाचाजी ने पसीना पोछकर रुमाल पुनः जेब में रख लिया और यूँ ही कुछ कुछ कहते आगे चलते चले गये.

सड़क पर बिखरे नोटों को देखकर मैने अपनी बहन से कहा-'चलो, जल्दी से ये सारे नोट उठाकर चाचा जी को दे देते हैं.'

बहन बोली-'ठीक है मैं भी आपकी मदद करती हूँ.' मैं बोली-'जरा जल्दी करो हमें चाचा जी को नोट वापस करने हैं.'

बहन बोली-'हाँ, हाँ जल्दी कीजिए!' हमने सारे नोट थैले में रखे. चाचा जी तो आगे जा चुके थे. फिर भी हम दोनों ने उनका पीछा किया और अन्ततः उन तक पहुँच भी गये.

मैं-'चाचाजी आपके रुपये.'

चाचाजी-'क्या ये मेरे नोट है?'

बहन-'जी चाचाजी! आप कुछ परेशान होकर जब पसीना पोछने के लिए जेब से रुमाल निकाल रहे थे, ये नोट तब ही रुमाल के साथ ही सड़क पर बिखर गये और आप आगे चलते चले गये लेकिन हमने ये नोट उठा लिये और आपको देने आये हैं. आप इन्हें संभालकर रखें.

चाचाजी की आँखों में आँसू भर आये. उन्होंने हम दोनों के सर पर हाथ फेरा और आगे बढ़ गये.

हम लोग लड्डू लेकर घर पहुँचे तो देखा कि माताजी और बाबूजी के सामने वही चाचाजी एक बड़ा सा थैला लिये हुए खड़े है. उन्हेंाने थैले से ढेर सारे उपहार निकालकर बाबू जी को दिये, और बोले-'ये सारे उपहार आपकी दोनों बेटियों के लिए हैं.'

माताजी व बाबूजी आश्चर्य से हम दोनों को देखने लगे. बाबूजी-'आखिर आज हमारी बेटियों ने ऐसा क्या किया है कि आप उनके लिए इतना सारा उपहार लाये हैं.'

चाचाजी-'नहीं भाई साहब! इन दोनों बच्चियों ने आज मुझे बदनाम होने से बचा लिया. मैंने कुछ रुपये उधार लिये थे, जिसको चुकाने की आखिरी मोहलत दी गयी थी वरना कोई भी कानूनी कार्यवाही हो सकती थी, लेकिन आपकी इन मासूम बच्चियों की वजह से मैं समय पर अपना कर्ज चुका पाया, नहीं तो मेरी लापरवाही तो मुझे कहीं की नहीं छोड़ती.'

बाबूजी-'नहीं! नहीं! यह तो उनकी समझ और कर्त्तव्यशीलता हैं. उन्हें करना ही चाहिये. इसमें कोई बड़ी बात नहीं है.'

चाचाजी-'अरे! आप इतनी बड़ी ईमानदारी को छोटी सी बात समझते हैं. नहीं, यह आप दोनों के संस्कारों का ही परिणाम है कि मैं आज उऋण हो सका वरना इतनी कोशिशों से जुटाये गये पैसों के बाद भी कर्जदार ही रह जाता. सब आपके संस्कारों का ही नतीजा है कि इन बच्चियों ने अनजाने ही मेरी मदद की और अपनी ईमानदारी का सबूत भी दिया. ऐसे होनहार बच्चे ही अपने माँ-बाप और देश का नाम रोशन करते हैं. कृपया आप यह छोटी सी भेंट बच्चियों के लिये रखें.

मेरी माताजी और बाबूजी की आँखों में आँसू आ गये. उन्होंने हम दोनों को गले लगा लिया और स्वयं पर गर्व अनुभव किया.

हम सभी की आँखें आत्म संतोष के भाव से नम हो गयी. चाचाजी के साथ हम सभी ने गणेशजी जो लड्डुओं का भोग लगाया और आरती के लिये एक गा उठे-

'जय गणेश! जय गणेश! जय गणेश देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा.'

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को इस अंक में उमा सोनी चाची की कहॉनी कर्म ही जीवन है पढने को दे रही हूँ. पसंद आये तो अपनी बहन को लिखिएगा. आपकी बहन
संस्कृति 'गोकुल'

बच्चों के लिए आवश्यक सुचना

हिन्दी के प्रचार प्रसार व भैया/बहिनों को हिन्दी में ललक जगाने के लिए बाल्य शाखा का गठन किया जा रहा है। इस शाखा के लिए भैया बहिनों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। केवल जवाबी लिफाफा के साथ एक फोटो अपना पूरा नाम, पिता का नाम, पता, मोबाइल संख्या लिखकर निम्न पते पर भेजना होगा. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

कहानी

पूर्व कथा

बैंक धोखाधड़ी के मामले में नामजद आशिक अली उर्फ छब्बन के पास तलाशी में एक अदद हनुमान जी की फोटो बरामद हुई. पुलिस ने उसके तार तस्कर या आतंकी संगठनों से भी जुड़े होने का शक जाहिर किया है.

गांव में पास स्थित बैंक से एक वृद्ध, वृद्धा पेंशन लेकर आता है. थाने का दीवान उसके घर जाकर उस पैसे के बारे में पूछताछ करता है.....

काश! वह मुझे बरी कर देता

ओम प्रकाश अवस्थी, बहराइच, उत्तर प्रदेश

तीसरा भाग

बूढ़े ने बिलकुल सहजभाव से बता दी थी ये बातें, मगर दीवान उतना ही असहज होता दहाड़ पड़ा, और बाकी हजार?

बूढ़ा विस्मय से चीख सा पड़ा, हुजूर कैसा हजार?

दीवान ने कच्ची फर्श पर डण्डा पटका. बूढ़ा कॉप गया पर उसका पोता उससे सट कर चिपक गया. गॉव में जब कभी पुलिस आती थी तो वह या तो किसी पेड़ पर चढ़ जाता था, या फिर भागा घर आता था और खटिया के नीचे जा छिपता था. मगर वही पुलिस जब घर में ही आ धमकी तो कहॉ जाता बेचारा?

दीवान फिर गरजा.

साला पूछता है कैसा हजार, जैसे कुछ जानता ही न हो... तो जान ले...तेरा ये मादर....छोकरा पूरे अठारह सौ लेकर आया है बैक से. झट रुपये निकाल ले वरना हड्डी पसली बटोर दूंगा.

उसकी धमकी पर बूढ़ा गिड़गिड़ाने लगा, कसम खुदा की मालिक, मैने सिर्फ आठ सौ ही निकलवाया है बैंक से. अगर एक पैसा भी ज्याद मिले हो मुझे, तो मैं कोढ़ी हो जाऊँ. उँगलियॉ सड़-गल गिरें औरे मेरे कीड़े पड़ जाये हुजूर... अच्छा...तो तू ऐसे नहीं कुबूलेगा. तो ले....

कहते-कहते दीवान ने उसकी टॉगों के पास इतनी तेज डण्डा पटका कि लगा बूढ़े की हड्डियॉ ही चटक गयी हों. दीवान ने चालाकी से डण्डा उसके पैरो से ठीक सट कर फटकारा था. मगर डर के मारे बूढ़े की घिघ्घी बॅध गयी. पर लड़के ने आव देखा न ताव, अचानक झपट पड़ा डण्डे पर.

दीवन गरजा, क्यों बे हरामी के पिल्ले, तेरी शामत आयी है क्या? छोड़ डण्डा. ..

लड़का मिमिया कर बोला, तो क्यों मारते हो मेरे दादा को?

दीवान ने पूरी ताकत से डण्डे को झटका दिया तो लड़का गिरता-गिरता बचा. मगर जब तक वह सम्हल पाता, दीवान ने उसकी जैकेट का कॉलर पकड़ा और घसीटता झोपड़ी से बाहर ले आया.

बूढ़ा हड़बड़ाता उठा और घर की चौखट पार कर गया. देखा, न कहीं दीवान था, न उसका पोता. सामने की चकरोट पर गर्द का गुबार उठ रहा था, जिसके उस पार दूर होती जा रही धड़धड़ाहट से लगा कि बुलेट ने रफ्तार पकड़ ली है.

बूढ़ा बेतहाशा चीख पड़ा, दीवान जी, ओ दीवान जी!

पर उसकी सुनने वाला वहॉ कोई न था. तब वह गला फाड़-फाड़ कर चिल्लाने लगा.,

हाय मेरा पोता! जल्दी दौड़ो, उसे दीवान ले गया!

मगर जब वहॉ कोई था नहीं तो दौड़ता कौन? बूढ़ा हारकर लठिया टेकता निकल पड़ा और अपनी कॉपती टॉगों से देर रात तक पूरे गॉव में चलता रहा और कहता रहा,

पुलिस मेरे रुपये भी ले गयी और पोता भी. रुपये मिले न मिले, मेरे पोते को छुआ लाओ. वह भूखा होगा. रोटिया सेंक कर मेरे पास तक आया ही था बेचारा, कि दीवान आ गया था....

मगर रात में पुलिस चौकी जाने की हिम्मत कोई भी न कर सका. और बात सबेरे तक टल गयी थी.

इधर चौकी आकर दीवान कसने लगा था लड़के को. उसकी बचकानी चीख पुकार से वह भुतही सी लगती पुलिस चौकी फूटी थाली जैसी झन्नाने लगी थी. सिपाही पिले पड़े थे उस अकेली जान पर.,

साले जल्दी बोल, कहॉ छिपाये तूने बाकी हजार रुपये?

मगर वह यही कहता रहा,

जो रुपये मिले, अपने दादा को दे दिये. ..

उसके इस जवाब पर सिपाहियों को खून खौल उठता और वे फिर पूरे जोश से छपकी बरसाने लगते उसकी पीठ पर. बच्चा चीखने लगता, रोने लगता तो पुलिस वालों के क्रूर चेहरों पर कुटिल हॅसी तैर जाती.

वह सिलसिला देर रात तक चलता रहा, मगर नतीजा सिफर का सिफर. लड़का वही बात रिपीट करता रहा. अन्त में उसे हवालात में बन्द करके दीवान भी चला गया और सिपाही भी.

अगले दिन का सूरज निकला, फिर आसमान पर चढ़ने भी लगा. दीवान में इन्तजार में था कि लड़के को छुड़ाने, मोहरनिया वाले आते ही होंगे. हजार रुपये बैंक वाले, और हजार दो हजार ऊपर के तो वह वसूल ही लेगा गॉव वालो से. तभी छोड़ेगा लड़के को. वो भी इस अहसान के साथ कि इस बार तो छोड़ दिया पर आगे से नहीं...

होते करते दोपहरी ढलने को आ गयी

पर मोहरनिया से कोई न आया. दीवान के मत्थे पर बल पड़ने लगे. सवाल पैसे का ही नहीं, इज्जत का भी था. दीवान ने कल शाम को बैंक में बड़ी हेकड़ी से कहा था कि वह हरहाल में रुपये वसूल देगा. वह सोच में पड़ गया...

बैंक से तो काम पड़ना ही है. घूस का क्या, न वो नोट देखे न रेजकारी, न कटा न फटा. घूस जैसी भी हो, लेनी ही पड़ती है. उस कूड़े के बदले हजार के कड़कते नोट! बैंक के सिवा भला और कौन दे पायेगा इस कंगाल इलाके में.?

सोचते-विचारते दीवान आफिस से बाहर निकल आया. एक सिपाही से बोला, जाओ. एक बार फिर कसो लौण्डों को, शायद काम बन ही जाये.

सिपाही ने कुछ सोचा विचारा. फिर बोल पड़ा.

बात कुछ समझ में नहीं आती दीवान जी, कि इतना कसने के बाद भी लौण्डे ने कुछ कुबूला नहीं. कहीं ऐसा तो नहीं कि उसने लिये ही न हों रुपये...

दीवान तपाक से बोल पड़ा,

तुम नहीं जानते उस गॉव को. हमारा रिकार्ड बताता है कि सीधा कराची और दुबई से जुड़ा है वहॉ का एन्टीना. बड़े शातिर कटुए है मोहरनिया के. वहॉ का खून ही गन्दा है साला...

उसके कहने पर सिपाही चला गया, मगर जरा सी देर में लौट भी आया. बोला, लौण्डा गहरी नींद में है दीवानजी. मेरी कई ठोकरों पर भी नहीं जुमसा.

दीवान चिड़चिड़ाता बोल पड़ा,

तो जाकर टॉग लाओ साले को, चूतड़ पर दस-पॉच छपकियॉ उतरते ही जग जायेगा हरामी का पिल्ला....

फिर थोड़ी ही देर में सिपाही सच में उसे टॉग लाया था दीवान के पास.

दीवान उसे देखते ही कड़का,

बता साले, कहॉ छिपा रखा है हजार रुपये?

लड़के ने जरा सी पलकें जुमसाई, फिर बुत बना बैठा रह गया.

दीवान के इशारे पर सिपाही ने लड़के की जैकेट उतार फेंकी तो उसकी नंगी पीठ पर नजर आने लगे थे बर्तियों के काले पड़ चुके निशान. और जहॉ कहीं खाल फट गयी थी, वहॉ खून के थक्कों पर पन्छा भी उतर आया था. दीवान ने एक बार को घूर कर उसकी पीठ का बारीकी से मुआइना किया, फिर बबूल की छपकी उठायी और सटासट उतारने लगा. बच्चे की ऑख खुल गयी. कुछ चैतन्य हुआ तो चीखने लगा, चिल्लाने लगा और फूट-फूट कर रोने लगा.

सिपाही दहाड़ा, बता साले, रुपये कहॉ गाड़ रखे हैं तूने? जल्दी बोल, नहीं तो तुझे उलटा टॉग कर नीचे से मिरचे सुलगा दूँगा. मैरे सारे रुपये अपने दादा को दे दिये थे...

कहता वह सिसकने लगा था.

मगर थोड़ी देर में अचानक क्या हुआ कि दीवान जैसे-जैसे कड़ा होता गया, बच्चा उतना ही ढीला पड़ता गया, और सुस्त होते-होते पूरी तरह खामोश हो गया. उसके चेहरे की पीड़ा भी सूखती गयी और ऑखों का पानी भी. वह बेजान सा बुत बन बैठा रह गया. शायद उसके जिस्म की गरमी ढल चली थी. एक तो कड़कती ठण्ड में वह सारी रात हवालात की सीलन भरी फर्श पर बिन किसी ओढ़न के पड़ा रह गया था, दूसरे कल से ही खाली पेट होने से अन्न जल की गर्मी भी ठण्डी पड़ चुकी थी. ऊपर से इतनी मार! बारह साल का बच्चा कहॉ तक रेजिस्ट कर पाता बेचारा?

अन्त में दीवान ने उसकी ककड़ी जैसी पतली कलाई को अपने कद्दावर पन्जे में कसा और लगा उमेठने उसका हाथ. मगर लड़का हल्की सी 'सी' कर के फिर बुत बन गया. तब तक सिपाही बोल पड़ा, रहने भी दो दीवान जी, कहीं कोई हड्डी चटक गयी या खिसक गयी इसकी, तो लेने के देने पड़ जायेगें. जवाब भी न देते बनेगा हम लोगों को....

दीवान ने कुछ सोचा विचारा और सिपाही की बात से सहमत होकर लड़के को फिर पहुँचा दिया हवालात की उस नर्क जैसी गन्दी और बदबूदार कोठरी में, जहॉ वह कल रात से ही बन्द था.

कितना अजीब था कि अच्छों-अच्छों के दिन में तारे देने का माद्दा रखने वाला दीवान, एक अदने बच्चे से हार गया था. परेशानी का सबब ये था कि लड़के को ज्यादा अर्से तक हवालात में रोक रखना मुनासिब न था. वैसे भी वह ढीला पड़ने लगा था. जबकि मौजूदा हालातों में अब पुलिस भी उचित आजाद नहीं रही. ये पत्रकार, ये मीडिया.... सबसे ज्यादा खतरनाक तो यहीं दोनों साबित हो रहे हैं उसके लिये.

धीरे-धीरे दोपहरी भी उतरने लगी थी पर लड़के को छुड़ाने कोई आया ही नहीं. वरना कुछ ले देकर उसे छोड़ देता दीवान. और लड़के को यूँ ही छोड़ देना, उसके लिये बेइज्जती की बात होती, साथ ही उसका मेहनताना भी मारा जाता.

वह इन्हीं बातों में उलझा अपने ऑफिस में अकेला बैठा था कि तब तक दरवाजे पर पड़ी चिक को हटाता कोई अन्दर घुस आया. आगन्तुक काले-कोट में था और बिना इजाजत लिये बेखौफ घुसा चला आया था. उसकी इस हरकत पर दीवान का खून खौल उठा. उसने निगाह उठा कर उसे घूर कर देखा. आदतन गाली उसके मुँह तक आ गयी पर सामने काले कोट के चलते उसने जैसे तैसे गाली निगल ली और सम्हल कर बोला, आप की तारीफ?

पर आगन्तुक उसकी बात का कोई जवाब न देकर उसके सामने पड़ी कुर्सी पर जा बैठा और खामोशी से अपना विजिटिंग कार्ड बढ़ा दिया उसकी ओर.

दीवान ने कार्ड को गौर से देखा. उस पर लिखा था, नूरुलहक अन्सारी, एडवोकेट, सिविल कोर्ट.
कार्ड पर निगाह गड़ाये-गड़ाये उसने ध ीरे से पूछा,
हॉ तो अपना काम बताओ, वकील साहब.
वकील पूछ पड़ा,
मोहरनिया का कोई नाबालिग लड़का पकड़ लाये हो आप?
पर दीवाान ने बड़ी कुटिलता और व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा,
वो लगता क्या है आप का?
वकील ने भी उसी तरह पलटवार कर दिया,
यही तो मैं आप से भी जानना चाहता हूँ कि आप का क्या लगता है वह लड़का?
दीवान तैश में आकर बोला,
जानना ही चाहते हो तो सुनो वकील साहब, वह हमारा मुलरिम लगता है और मुजरिम तो मुजरिम ही होता है, चाहे बालिग हो या नाबालिग.
वकील तपाक से पूछ पड़ा, उसका गुनाह?
दीवान दृढ़ता से बोल पड़ा, उसने बैंक से धोखाधड़ी की है! अपने बाप के बाप का रुपया निकाला है उसने. वो भी आठ सौ की जगह अठारत सौ...
सुबूत?
विड्राल फार्म के पीछे अठारह सौ की डिटेल दर्ज है.
डिटेल दर्ज किसने की?
दीवान झल्ला गया. बोला, ये सवाल आप बैंक जा कर पूछो.
वकील भी उखड़ गया,
बैंक ने अगर इस बावत कोई एफ. आई.आर. लिखवाई हो तो दिखा दो. फिर मैं बैक चला जाऊँ...
दीवान कुछ पलों को खामोश रह गया. फिर धीरे से बोला,
सिर्फ इतना ही नहीं, और भी बाते हैं वकील साहब. आप सुनोगे तो चौंक जाओगें.
वकील अपने लहजे को तनिक नर्म करता बोला.
आप बताओ तो सही.
पर दीवान कुछ ऊँची आवाज में बोल पड़ा,
आप तो मुसलमान हो न.....आप सच बताना, क्या अपनी जेब में, या घर में आप ने कभी किसी हिन्दू देवी-देवता की तस्वीर रखी है?
वकील ने पूछा, मगर इस का लड़के से क्या ताल्लुक?
दीवान झट बोल पड़ा,
ताल्लुक है कैसे नहीं. इस लौण्डे की जेब से हनुमान जी की फोटो बरामद हुई. दरअसल फोटो का इस्तेमाल, ये खुद को पोशीदा रखने के लिए करता है, ताकि सही शिनाख्त न हो पाये. इसके पीछे किसी गैंग का दिमाग है. और वहीं से तार जुड़े है, इस लौण्डे के.
वकील गम्भीर होकर बोला,
आप लड़के को बुलाओ तो सही. मैं आप के सामने ही उससे उलगवा लूँगा सारी बातें.
फिर कुछ ही देर बाद लड़का ले आया गया था. वह कमरे के एक कोने में जाकर जमीन पर उकडू बैठ गया. वकील ने उसे देखा फिर कुर्सी छोड़ दी. लड़के के पास जाकर पहले उसके सिर पर अपना हाथ रखा, प्यार से सहलाया फिर बड़े अपनत्व से बोला,बेटा छब्बन, मुझे तो जानते ही होगें?
लड़का कुछ न बोला. तो वकील ने बात आगे बढ़ा दी. बोला,
मैं, तो तुम्हें जानता हूँ. तुम्हारे दादा को भी. तुम्हारे दादा भी मुझे जानते हैं. जब मैंने सुना कि तुम चौकी पर गये हो तो मैं तुमसे मिलने यहॉ चला आया.
लड़का तब भी कोई जवाब न दे सका. कुछ ही पलों बाद वकील फिर बोल पड़ा,

तेवरी

जिन्हें प्यार से हेरे साथी,
वे दुश्मन हैं तेरे साथी।
केवल वंशज हैं सॉपों के
अब जो दिखें सपेरे साथी!
धूप नहीं अब तम का जादू
सूरज रोज उकेरे साथी।
फिर आये नदिया के तट पर
लेकर जाल मछेरे साथी!
कविता को बॉटों रोटी-सा
लोग भूखे न घेरे साथी।

रमेश राज, अलीगढ़, उ.प्र.

कल तुम अपने दादा को सायकिल पर बिठा कर बैंक ले गये थे छब्बन?
लड़के ने हॉ कर दी.
बैंक क्यों गये थे तुम?
दादा का रुपया निकलवाने.
रुपये निकालने वाला कागज किससे भरवाया था तुमने?
रहमान चच्चा से.
अच्छा, फिर तुम्हें रुपये दे दिये होगे बैंक वाले ने.
लड़के ने सिर हिलाकर हॉ कर दी.
तब वकील फिर पूछ पड़ा, पाने के बाद, क्या तुमने गिने भी थे रुपये?
लड़के ने सिर हिलाकर 'ना' कर दी.
वकील का अगला सवाल था.,
तो क्या तुम्हारो दादा ने गिने थे रुपये?
लड़के ने फिर ना कर दी.
तो क्या किसी ने भी नहीं गिने थे?
वकील के इस प्रश्न पर लड़का बुदबुदाया,
गिने थे,
किसने?
रहमान चच्चा ने.
कौन रहमान चच्चा?
सरैयूया वाले.
तुमने कहा था उन्हें गिनने को?
लड़का धीरे से बोला, वही कहे थे कि लाओ गिन दूँ.

फिर?
फिर लौटा दिये थे. तब मैंने जाकर अपने दादा को दे दिये थे रुपये...
शब्बास बेटा...कहकर वकील ने बच्चे की पीठ थपथपायी फिर लौट आया दीवान के पास. बोला, आप तो जानते ही होगे सरैयूया के रहमान को?
दीवान माथा सिकोड़ता बोला, होगा कोई....हमारे इलाके में तो तमाम रहमाान है.
वकील छूटता बोल पड़ा.
तमाम नहीं सिर्फ एक. और आप उसे अच्छी तरह जानते भी हो. वह आपका मुखाबिर ही नहीं, प्रधान का भी खास आदमी है. मोहताजी पेंशन की दर्ख्वास्त से लेकर बैंक में पेमेन्ट होने तक वह उन गरीबों से जोंक जैसा चिपका रहता है. ब्लाक और बैंक का भी दलाल है वह. जानवरों में स्यार और इन्सानों में दलाल.....इनकी भी एक नस्ल होती हैं, जिन्हें हमने भी पाल रखा है कि वो हमारे पास मुअक्किल लायें. वे लाते हैं और शाम को घर आकर अपनी दलाली ले जाते हैं. ग्राम प्रधान से लेकर मंत्री तक, सभी किसी न किसी के दलाल है, और उनके भी तमाम दलाल. पूरी चेन है नीचे से ऊपर तक.
हम आप करें भी क्या? सिस्टम ही ऐसा है. मगर सिस्टम की इस चक्की में जब कोई औरत, बच्चा, बूढ़ा या बेगुनाह पिसने लगता है तो हम लाख पत्थरदिल, कमीने या खुदगर्ज क्यों न हो, एक बार को भीतर ही भीतर दहज जरुर जाते हैं. इसकी वजह शायद यही हो कि तब हमारे दिमाग में अनचाहे ही ये बुरी बात कौंध जाती है कि खुदा न खास्ता कहीं कुछ ऐसा ही हमारे या हमारे घरवालों के साथ हुआ तो....? और बेगुनाह को पिसता देख हम इसलिये कॉप जाते हैं कि हम खुद भी हमेशा गुनेहगार नहीं हुआ करते दीवान जी.

दीवान ऊबता अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ. बोला,
ये सब फिजुल की बातें हैं वकील साहब. वैसे, आप यहॉ आये किसलिए हो... क्या लौण्डे को छुड़ाने?
बात पूरी करते-करते उसने कदम आगे बढ़ा दिये, कि तब तक वकील बोल पड़ा,
छुड़ाने वाली बात बाद में. पहले तो मुझे आप का थोड़ा-सा वक्त और चाहिये दीवान जी. दरअसल रुपये वाली बात तो साफ हो गयी, मगर हनुमान जी वाली अभी बाकी है. चाहता हूँ कि उसका भी खुलासा कर दूँ....
दीवान मजबूर होकर फिर आ बैठा अपनी कुर्सी पर, तब वकील ने अपनी बात आगे बढ़ा दी थी. उसने कहा, पहले तो आप ये जान लो कि मेरी पैदाइश सरैयूया की है, मोहरनिया से सिर्फ मील भर पर. इलाका तो वह भी आप ही का है. और इस जवार में मैं अकेला ऐसा शख्स हूँ जिसके नसीब में वह तालीम आयी जिसे आप तालीम कह सकते हो. इन दोनों मुस्लिम गॉवों में एक-आध को छोड़ सभी अंगूठा टेक हैं. यूँ तो यहॉ के लोग शहर आकर मुझसे अक्सर मिलते ही रहते है, मैं वकील जो ठहरा,...पर मैं भी एक आध महीनों में अपने गॉव जाकर घूम जरूर जाता हूँ. शायद मिट्‌टी के खिंचाव के चलते...
मुझे याद है, मेरे बचपन में गॉव जवार के शेख सैयूयद या खॉ साहब जैसे ऊँचे तबके के लोग मुझे 'साला जुलाहे की औलाद' जैसे जुमले से नवाजा करते थे. ये ऊँच-नीच वाली बीमारी आप हिन्दुओं में ही नहीं, हम मुसलमानों में भी कुछ कम नहीं है. हालॉकि अब के बदले जमाने में जात से ज्यादा दौलत और स्टेटस देखी जाती है. शायद इसीलिये वही लोग अब मुझे बड़ी इज्जत से 'जनाब अन्सारी साहब' कहा करते हैं.

खैर, अब हम आते हैं मतलब की बात पर, कि मैं कल रात मोहरनिया में था. उधर आप लड़के को ले गये, इधर उसका बूढ़ा दादा अपनी झुकी कमर लिये लाठी टेकता पागलों जैसा पूरे गॉव के चक्कर काटने लगा. वह घर-घर और दरवाजे-दरवाजे जाकर रोया और गिड़गिड़ाया था,
दीवान मेरे रुपये भी ले गया और लड़का भी. हजार दो हजार जो भी लगे, मेरे बच्चे को छुड़ा लाओ. रुपये मैं अपनी पेंशन से भर दूंगा, मेरा बेचारा छब्बन...
दीवान जी, हम आप शहरी लोगों के लिये रुपया भले ही पानी हो चला हो, पर गॉव के कंगालो के बीच वह अब भी खासा रुतबा रखता है...तो जनाब, बूढ़े के रोने-धोने पर गॉव वाले बच्चे पर जितना पसीज गये, आप पर उतना ही आग बबूला हो उठे. मगर पुलिसिया खौफ के चलते रात में कोई चौकी तक आने की हिम्मत न कर सका. तो भी, आम राय से ये बात जरुर तय हो गयी कि जैसे भी हो, सुबह होते ही चौकी जाकर लड़के को छुड़ा लाना है. मगर आज सवेरा होते ही पूरी की पूरी फिजा ही बदल गयी. हुआ ये कि जाने कैसे एक बुरी खबर दाखिल हो गयी गॉव में, कि पुलिस चौकी में तलाशी के दौरान लड़के की जेब से हनुमान की फोटा बरामद हुई.
...क्रमशः..........

समुन्दर का कहर

समुन्दर दे रहा आवाज
छेड़ों न जहॉ वालो,
अगर तुम राग छेड़ोगे
सुनामी हर लहर होगी।
भयानक आग दावानल
दहकता मेरे सीने में
अगर तुम रार छेड़ोगे
सुनामी हर कहर होगी।

✍**शिवेन्द्र त्रिपाठी,** प्रतापगढ़, उ०प्र

कविताएं

भारत का विजय पर्व

जागा जन-जन के मन में आज नया विश्वास है।
भारत का सौभाग्य सुनहरा बदल रहा इतिहास है।
अभिनंदन स्वागत करें, भारत विजय का पर्व है
राहत पाने लगी जिन्दगी इस पर सबको गर्व है,
नूतन उम्मीद जवान हुई अधर-अधर उल्लास है।
भारत का सौभाग्य सुनहरा बदल रहा इतिहास है।
घुटने टेक रही मंहगाई, बेईमानी डरने लगी,
मजबूरी से मुक्त गरीबी झोपड़ियॉ हॅसने लगी,
चोतरफा गूंजे गीत नये मन्जिल दिखती पास है।
भारत का सौभाग्य सुनहरा बदल रहा इतिहास है।
कर्म, धर्म, अनुष्ठान में जीवन का उद्धार करें,
मिल जुल सभी स्वदेश का नया सृजन श्रृंगार करें,
पतझड़ का मौसम बीता आया फिर मधुमास है।
भारत का सौभाग्य सुनहरा बदल रहा इतिहास है।

जगन्नाथ विश्व, नागदा, म.प्र.

मर मिटेगें देश पर

मर मिटेंगे देश पर हम, मर मिटेगे देश पर
हम दूर कर द्वेष को हम
मिटने न देंगे अखण्डता और एकता देश की हम .
धर्म और समाज विरोधी तत्वों को न बढ़ने देगें
प्यार और दुलार का हम पाठ सबको पढ़ने देगें
भूलेंगे न उम्र भर हम गौतम के संदेष को हम।
मर मिटेगे ....
देश हमकों सबसे प्यारा देश के हित में मिट जायेंगें
तन-मन-धन सब अर्पण करके देश पर लुट जाएगें
मौत जब आनी है इक दिन क्यूं न मरे फिर देश पर हम
मर मिटेगें.....
विशेषता यह है हमारी भिन्न हैं पर एक हैं
वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा अपनी नेक हैं
देश द्रोही अरू अरि को मौत का पैगाम हैं हम
मर मिटेगें.........

पंकज कुमार 'प्रियदर्शी', नई दिल्ली

इन्तजार में

अंधियारे में ढूंढता
अब तुम्हें मेरा यह दिल,
सूना है आशियाना
गुम हो गई चहल-पहल
बेरहम हो गया वक़्त
छीन प्यार की हलचल,
अब सुनसान सनम कदा
देख दहल रहा यह दिल
हदीस बन गई हैं ऑखें
पीने नज़रे हलाहल,
करदे तमन्ना पूरी
आकर मिटा दें हलबल
बदनसीब बन गया
यूँ फ़क़त इन्तजार में
आ, सब्र का बांध टूटेगा
'नलिन' हो रहा व्याकुल.

सुगन चन्द्र 'नलिन', गुना, म.प्र.

$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$

वटवृक्ष

तुम्हारी अंगुली पकड़कर,
निष्छल भाव से,
चल दी थी मैं
पहाड़ सी ज़िन्दगी का
बोझ ढोने,
दिन बीतते गए, वर्श बन
गए व
दिखने लगा यादों का
विषाल वटवष्क्ष,
जो दिन-प्रतिदिन घना
होता दिखता,
परन्तु क्यूँ, आज
इसके घनत्व की छाया,
मुझे ठंडक नहीं देती।
क्यूँ तुम बदल गए,
मुझे अकेला सा कर दिया
इसकी षिखर की टहनी पर
बिठा कर,
जहाँ से मैं सबको देख तो सकती
पर भाग नहीं।

शबनम शर्मा,जिला सिरमौर, हि.प्र.।

++++++++++++++++++++++

परिन्दा है

बात लाखों में ये चुनिन्दा है।
अब भी इन्सान यहां जिन्दा है।।
आदमी सर उठायेगा कैसे।
कांधो पे कागजी पुलिन्दा है।।
सूनी गलियों में शोर जागा फिर।
आ रहा फिर वही दरिन्दा है।।
रोशनाी पर्वतों पे क्यों ठहरी।
तलहटी में इसी की निन्दा है।।
पंख काटे गये हैं कल जिसके।
सिर्फ आजाद वो परिन्दा है

++++++++++++++++++++++

दूसरों के दुख में मजे पा रहे है लोग।
आदमी का खून पिये जा रहे है लोग।।
हम लायेंगे सहर यहां हम लायेंगे सुबह।
मजहब का नाम लेके लड़े जा रहे है लोग।।
बस्ती गरीबों की वो उजाड़ी है इसलिये।
अपने खुदा का घर वहां बनवा रहे है लोग।।
भूख प्यास साथ ले नंगे बदन गया।
चन्दा उसी के नाम यहां खा रहे है लोग।
जिसको बनाके आदमी के हाथ कट गये।
आज उसी ताज के गुण गा रहे है.

ओम रायजादा, कटनी, म.प्र.

$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$$

साहित्य समाचार

पावापुरी में आध्यात्मिक कवि सम्मेलन

श्री पावापुरी तीर्थ जीव मैत्री धाम में वैराग्यदेशनादक्ष आचार्य श्री हेमचंद्रसूरिजी, दीक्षादनेश्वरी आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी आदि नौ आचार्य भगवतों एवं २५० से अधिक साधु-साध्वीवृंद की शुभ निश्रा में आयोजित भव्य अंजन-प्रतिष्ठा महामहोत्सव के अन्तर्गत भव्य आध्यात्मिक कवि सम्मेलन संपन्न हुआ. कवि सम्मेलन में कवियों ने अध्यात्मपरक एवं हास्य-व्यंग्य की कविताओं से उपस्थित श्रोताओं को काव्य रस की गंगा में डूबो दिया.

अध्यात्मिक कवि सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए कवि कुलदीप 'प्रियदर्शी' ने 'ये महामंत्र नवकार है...मन मंदिर में मन से मनवा, इसको तू बसाना, रग-रग में नवकार रमाकर, इसमें ही रम जाना, घिर आए गर्दिश में घनघोर घटा ना घबराना, प्रभु पाद पंकज में प्यारे, परमातम पद की पाना, सत्यं शिवं सुदरं का यह सत्य सिद्ध संस्कार है.. .सुनाकर संपूर्ण वातावरण को नवकारमय बना दिया. कवि प्रियदर्शी ने जैन संस्कृति में आई विकृतियों का पदाफाश करते हुए प्रसिद्ध गीत 'रोकना है जैन संस्कृति का पतन, बदलो रे बदलो अपना चलन' को वन्समोर और तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सुनाया.

राजस्थानी हास्य कवि डाडमचंद डाडम की 'तीर्थकर महावीर ने बात कहीं पेंटेट, सच्ची है अच्छी है, सेंट परसेंट, दुनिया में आकर कौन रहा परमानेंट, क्या राम-क्या रावण सबको छोड़नी पड़ी अपनी टेंट....आदि हास्य कविताएं सुनाई.

हास्य-व्यंग्य कवि जगदीप 'हर्षदर्शी ने आधुनिक खान-पान व्यवस्था पर व्यंग्य काव्य रचना 'टाई पेरी गर्दन में, पहने देखो सूट, उभो-उभो जीमें है ज्यूं रेगिस्तानी ऊँट, फरतो-चरतो जावे पेट ने भरतो जावे....सुनाई तो श्रोताओं के हॅसते-हॅसते पेट में बल पड़ गया. कवि राजेन्द्र गोपाल व्यास ने अध्यात्म के चरम शिखर को स्पर्श करते श्रेष्ठ गीत सुनाकर सभी को अभिभूत कर दिया, कवि व्यास की काव्य पंक्तियां 'मुझे कंकर भी मिलेगा तो फूल सोपूँगा, अब बबूलों के बदले मैं गुलाब रोपूंगा, तुम्हारे साथ रहा अब तलक में अंजाना, अब शमा पे जलूँगा बनके नया परवाना. ..पर श्रोताओं ने जमकर तालियॉ बजाई. कमलेश सहज ने हास्य व्यंग्य- बेटी घर का उजियाला होती है, बेटी अमृत का प्याला होती है, खुशनसीब होती है वे माताएँ, जिनकी बेटियॉ चंदनबाला होती है,...सुनाकर सभी को भावविभोर कर दिया. आमंत्रित कवियों का स्वागत मैनेजिंग ट्रस्टी प्रकाश के. संघवी ने किया.

हरिचरण वारिज को काव्य रत्नाकर

निर्दलीय प्रकाशन के स्थापना दिवस पर भोपाल स्थित मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मायाराम सुरजन भवन में वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार श्री गोवर्धन दास मेहता द्वारा अपने पिताश्री पंडित चतुर्भुज मेहता की स्मृति में स्थापित 'काव्य रत्नाकर' अलंकरण राजधानी के वरिष्ठ गीतकार श्री हरिचरण वारिज को जिलाध्यक्ष सत्र न्यायाधीश कुंवर सुरेन्द्र सिंह सिसौदिया, कटनी के हाथों किया गया. कार्यक्रम में भोपाल के महापौर श्री सुनील सूद ने एक हजार रुपये की सम्मान राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया. कार्यक्रम की अध यक्षता सम्मेलन के अध्यक्ष श्री अक्षय कुमार जैन ने की. इस अवसर पर निर्दलीय के मुख्य सलाहकार श्री हुकुम सिंह 'विकल' विशेष रुप से मंच पर उपस्थित थे. आरम्भ में निर्दलीय प्रकाशन की ओर से श्री कैलाश श्रीवास्तव आदमी ने स्वागत वक्तव्य दिया.

जनमेजय को डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय स्वतन्त्र पत्रकार महासंघ के प्रान्तीय मंत्री व साहित्यकार श्री जसवंत सिंह जनमेजय को पूर्वोतर हिदी

अकादमी, शिलांग मेघालय द्वारा शिलांग में आयोजित पूर्वोत्तर क्षेत्रीय हिंदी विकास सम्मेलन एवं अखिल भारतीय लेखक सम्मान समारोह के अवसर पर उनके समग्र लेखन तथा साहित्यधर्मिता के लिए डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान २००८ से सादर विभूषित किया गया. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई।

कवि 'पारस' को बाल साहित्य सृजन सम्मान

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भीमताल, नैनीताल में आयोजित राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में सामयिकी के नियामक सुकोमल भावों के कवि वंशी लाल 'पारस' को बाल साहित्य सृजन सम्मान प्रदान किया गया. मुख्य अतिथि डॉ. विनोद चन्द्र पाण्डेय व अध्यक्षता डॉ० यशोधर मठपाल ने की. संयोजक उदय किरौला थे.

खेल की दुनिया

वाली बॉल

सर्विसः-सर्विस क्षेत्र ०६ चौड़ा होता है। यह एण्ड लाईन के पीछे होता है। कोर्ट के दोनों साईड लाईन से २० से०मी० की जगह छोड़कर १५ सेमी० लम्बी रेखायें खीचीं जाती है। सर्विस क्षेत्र फ्री जोन के अन्त तक फैला होता है।

सब्सटीट्यूशन जोनः- अटैक एरिया से स्कोरर टेबिल तक का क्षेत्र सब्सटीट्शयन जोन कहलाता है।

वार्मअप जोनः-स्थानापन्न खिलाड़ी बैंच की सीध में फ्री जोन के अन्तिम छोर पर ३ ग ३ मी० वार्म अप क्षेत्र बनाया जाता है।

प्रकाशः-खेल मैदान के ऊपरी सतह के ०१ मीटर १००० से १५०० से १५०० लक्स प्रकाश खेल क्षेत्र में होना चाहिये।

नेटः-०१ मी० चौड़ा और ६.५ मी० लम्बा एवं स्कावयर १० सेमी० होता है नेट के ऊपर सफेद पट्टी ०५ सेमी० चौड़ी होती है। नेट दोनों खम्भों के लचीले तार से बांधा जाता है।

नेट की ऊँचाईः-पुरुषों के नेट की ऊँचाई मध्य भाग से २.४३ मी० तक महिलाओं की २.२४ मी० होती है। नेट के दोनों किनारों ४२ ऊँचाई २ सेमी० अधिक होती है।

एन्टीनाः-१.८० मी० लम्बा तथा १० मिमी० गोल होता है। नेट के ऊपर ८० सेमी० तथा १० सेमी० लाल सफेद धारियों का होता है।

पोलः-पोल की दूरी साईड लाईन से ५० सेमी० अथवा १ मी० दूर होती है।

बॉलः-बॉल की गोलाई ६५ से ६७ सेमी० तथा वजन २६० ग्राम से २८० ग्राम हवा भरने पर होगा। प्रतियोगिता में ०३ बॉल को होना अनिवार्य है।

टीम के खिलाड़ियों की संख्याः-

वालीबॉल में एक टीम में १२ खिलाड़ी होते हैं। खेलने वाले खिलाड़ियों की संख्या ०६ होती है।

लिब्रोः-यह खिलाड़ी ११ अन्य खिलाड़ियों से अलग होता है तथा इसकी जर्सी भी अलग होती है। यह खिलाड़ी बैक जोन में ही रहता है।

अंको की गणनाः-प्रत्येक सेट २५-२५ अंक का होता है तथा ५ सेट का गेम होता है। प्रत्येक टीम को २ अंक अधिक बनाने होते हैं। जीतने के लिये निर्णायक सेट १५ अंक का होता है।

मैच के अधिकारीः-१- प्रथम रेफरी २- द्वितीय रेफरी (अम्पायर) ३-स्कोरर ४- लाईन जजेज

नियम एवं कार्ड का प्रयोगः-

१- पीला कार्ड-दुर्व्यवहार के लिये चेतावनी।

२- लाल कार्ड-दण्ड देने के लिये।

३- पीला एवं लाल कार्ड-निष्कासन।

४- पीला एवं लाल कार्ड अलग-अलग दिखाना-अयोग्य।

अण्डर हैण्ड पासःअण्डर हैण्ड पास का ेन्मक अंससमल में बहुतायत होता है। किसी अच्छी टीम के लिए यह Skill बहुत Perfect होनी चाहिये। क्योंकि अण्डर हैण्ड पास के बाद ही सेटिंग अटैक तथा ब्लाक होता है। इसलिये टीम की यह Skill बहुत अच्छी होनी चाहिये। ज्यादा शक्ति से किया गया अटैक को अण्डर हैण्ड पास के द्वारा ही ठीक से अपने कोर्ट के खिलाड़ी को पास किया जा सकता है। इस पास से पर दिशा नियन्त्रण ज्यादा बना रहता है तथा यह पास स्मैश (Smash) से प्रतिरक्षा करने हेतु उचित होता है।

अण्डर हैण्ड पास के निम्न नाम हो सकते हैं। (dig pass) अमेरिकन नाम (रिसेप्सन) रिसीव सप्लाई आदि।

Teaching Stages

खड़े होने की स्थितिः-

अण्डर हैण्ड पास में चसंलमत स्थिति के अनुसार ैजंदबम लेते हैं। ैजंदकपदह और कपंहदंस दोनों हो सकते हैं। पैरो की दूरी सुविधानुसार होगी।

शरीर की स्थितिः-

इसमें घुटने मुड़े होंगे हाथ एक दूसरे से हथेली से बंधे होंगे।

वालीबॉल खेल के कौशल

अण्डर हैण्ड सर्विसः-

यह सर्विस सभी सर्विसों से सरल हैं तथा यह सर्विस नये खिलाड़ियों के द्वारा की जाती है।

ज्मंबीपदह ैजंहमे

1- Stance

2- Body position

3- Toss of the Ball

4- Contact of the Ball

5- Follow through

अन्डर हैण्ड सर्विस करने के लिए ैमतअपबम ंवदम में एक पैर दूसरे पैर के आगे ;क्पहदंस ेजंदबमद्ध रखकर खड़े होंगे। जिस हाथ से सर्विस करनी हो, उसका विपरीत पैर आगे होगा। जैसे बांये हाथ से सर्विस करनी हो, उसका विपरीत पैर आगे होगा। जैसे बांये हाथ से सर्विस करनी हो, तो बांया पैर आगे होगा। घुटने थोड़े से मुड़े होंगे शरीर के कमर के ऊपर का भाग थोड़ा सा आगे की ओर झुका होगा। इस स्थिति में अगर आपने बाल बांये हाथ के ऊपर पकड़ी है एवं बॉल अंगुलियों पर है। तब दायां हाथ पीछे ले जायेंगे। सर्विस प्रारम्भ करने के लिए बॉल हवा में उछाले दाहिने हाथ आगे की ओर स्वींग करेगा (स्वींग घुटने के पास से होगी) तभी गिरती गेंद को मारा जा सकता है। गेंद को मारने के पश्चात् गेंद की दिशा में त्पहीज ींदक विससवू करेंगे, जिससे सर्विस को दिशा मिलेगी। इसके बाद शरीर सीधा होगा।

मासिक राशिफल अगस्त २००६

मेष-चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,अ वृष-इ,उ,ए,ओ,वा,बी,बू,वे,वो मिथुन-का,की,कु,घ,ङ,छ,के,को,ह कर्क-ही,हू,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो सिंह-मा,मी,मु,मे,मा,टा,टी,टू,टे कन्या-टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो तुला-रा,री,रू,रे,रो,ता,ती,तू,ते वृष्चिक-तो,ना,नी,नू,ने,नो,मा,मी,यू धनु-ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,टा,भे मकर-भो,जा,जी,खी,खू,खे,खो,गा,गी कुम्भ-गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,स,सो,दा मीन-दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची.

मेष-शारीरिक कष्ट, माता-पिता से लाभ, व्यापार में स्थिरता धनागम में वृद्धि

वृष-जीवन साथी का सहयोग/मांगलिक कार्यो में व्यस्तता/व्यय की अधिकता रहेगी।

मिथुन-स्वास्थ्य अच्छा रहेगा/मनोकामना पूर्ण होगी। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

कर्क-नवीन कार्य योजना बनेगी। रूके हुए कार्यो में प्रगति, धनागम सामान्य

सिंह-शारीरिक, मानसिक परेशानी, ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ेगी, मास उताार-चढ़ाव भरा है

कन्या-आय-व्यय समान, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि, नये सम्बंध बनेगें, व्यापार में उन्नति

तुला-व्यय की अधिकता, जन सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य उत्तम, शत्रुओं से सावधान रहें.

वृष्चिक-सन्तान से सुख, मित्रों से मतभेद, व्यर्थ के विवाद से बचें, शत्रुओं पर विजय

धनु-जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे. सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि, व्यय की अधिकता

मकर-कार्य में व्यवसाय में सफलता, नौकरी में पदोन्नति, धन लाभ, मित्रों का सहयोग

कुम्भ-मानसिक कष्ट, मित्रो से मतभेद, धन लाभ सामान्य, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव

मीन-नये सम्बंध बनेंगें. राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे

पं० संजय कुमार चतुर्वेदी, लखीमपुर खीरी,उ.प्र.

चिट्ठी आई है

संस्थान की क्रियाशीलता दर्शाता है

पत्रिका का अंक मिला. साहित्य मेला की विस्तृत रपट पढ़ने को मिली. सम्मानित साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय एवं जानकारी मिली. अच्छा लगा. संस्थान की व्यापक गतिविधियों के बीच साहित्य के प्रति उसका सकारात्मक दृष्टिकोण और उसकी परिपूर्ति में साहित्यकारों की सराहना की क्रियाशीलता सोचने को विवश करती है कि संस्थान साहित्य के प्रति कितना समर्पित है. साहित्य मेला का पूरा कार्यक्रम इस समर्पण का एक ज्वलन्त उदाहरण है. वास्तव में यह रचनाकारों की सराहना है जो उन्हें सतत रचने की उर्जा प्रदान करती है. इसके लिए कृपया संस्थान के प्रमुख के रूप में चांस परिवार की बधाई स्वीकार करें.

सुरेन्द्र कुमार सिंह, संपादक, चांस, मऊ, उ.प्र

++++++++++++++++++++++++++

सम्पादकीय अच्छी लगी

पत्रिका के अंक में आपके सम्पादकीय को पढ़कर सुखद आश्चर्य हुआ. वह पचपन की नायिका, दिखती है पच्चीस,मेकअप तुझे प्रणाम है, तु यूग का जगदीश
और दूसरे दोहे-बाली वुड के अजब है रंग-ढंग दस्तूर
जिसके तन पर वस्त्र कम, मलिका वही हुजूर।
मुझे अच्छा लगा. पत्रिका की सामग्री पठनीय व रोचक है. विशेषकर लघुकथायें अधिक अच्छी लगी.

डॉ. रामसनेही लाल शर्मा, फिरोजाबाद, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. देश की आंतरिक सुरक्षा के खतरों को लेकर आपका सम्पादकीय मन को झकझोरता है. लगता है हमने अपनी शान्ति को देश के ही रक्तबीजों के सुपुर्द कर रखा है. देश से गद्दारी करते नेताओं से जब तक मुक्ति नहीं मिलेगी, तब तक देश यूँ ही आतंकवाद की भट्टी में सुलगता रहेगा.

रमेश राज, संपादक, तेवरी पक्ष, अलीगढ़, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++++++++++

वर्षो से आपकी प्रतिभाओं से पूर्णावगत हूँ

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. स्मरण के लिए कोटिशः बधाईयॉ... डॉ. राज बुद्धिराजा के व्यक्तित्व पर आधारित यह अंक प्रेरणीय, ज्ञानबर्द्धक है. पूजनीय सुश्री बुद्धिराजा जी प्रतिभाओं की धनी है. निश्चित ही साहित्य जगत के साथ मानव समाज को दिशा मिलेगी. विगत कई वर्षो से आपकी प्रतिभाओं से पूर्णावगत हू. आप जैसे विद्वानों की लेखनी से ही तो संसार को आलोक मिलता है.

मंगत रवीन्द्र, जांजगीर, चाम्पा, छ.ग.

+++++++++++++++++++++++++++++++++++

निश्चय ही आपने अत्यंत स्तुत्य कार्य किया है

अत्र कुशलं तत्रास्तु! बड़े दिनो के बाद आपके द्वारा संपादित प्रेषित विश्व स्नेह समाज का सुश्री बी.एस.शांताबाई विशेषांक मिला. बड़ी प्रसन्नता हुई. सुदूर दक्षिण में बस कर भी आत्मिक समर्पण से हिन्दी भाषा साहित्य की मशाल जलाने वाली एवं बहुमुखी प्रतिभा सपन्न परम विदुषी सुश्री शांताबाई पर विशेषांक प्रकाशित करके निश्चय ही आपने अत्यंत स्तुत्य कार्य किया है. गुमनामियों के अंधेरों से निकालकर उन्हें आपने आलोक में लाकर हिन्दी जगत के समक्ष प्रतिष्ठित किया है. आपका यह पुण्य कार्य हिन्दी जगत में चिरस्मरणीय रहेगा. अंक में संकलित अन्य सामग्री भी यथास्थान सार्थक व पठनीय है. आपको बहुशः बधाइयॉ व धन्यबाद.

प्रो० भगवान दास जैन, अहमदाबाद, गुजरात

✍**सुरेन्द्र कुमार सिंह,** संपादक चांस, मऊ, उ.प्र. की लघुकथाएं

हार–जीत

रोने धोने से काम नहीं चलने वाला है., हिम्मत जुटाओं और आने वाली चुनौतियों का सामना करो. हार जीत तो लगी रहती है. तुम्हें बुरा कहकर तुमसे बुरा कोई जीत गया. यह तो एक त्रासदी है. भई जो अच्छा हो उसे जीतना चाहिये. जीतने वाला अगर तुमसे बुरा है तो उसकी जीत को जीत कैसे कहा जा सकता है. सचमुच अगर तुम अपने से बुरे से हारे हो तो समझो तुम्हारे अन्दर तुमको जीतने वाला हाजिर है. अगली लड़ाई शुरु करने से पहले उसको अपने अन्दर से बाहर निकालो. पर यह भी एक भिन्न किस्म की लड़ाई है.

सहायता

दोनों ने मेरी सहायता की है. एक ने न्यायालय में मुझे गैर जिम्मेदार बताकर जिस झमेले से बाहर निकाला, दूसरे ने उस झमेले में मेरे उपर लगे मिथ्या आरापों को समाप्त करने का आदेश देकर मेरी सहायता की. पर वो दोनों एक दूसरे से दूर रहे. हां मेरी सहायता करने के लिए दोनों एक साथ मेरे करीब तक आये. फिर वापस चले गये. एक दूसरे से दूर और अब बहुत दूर और अब तो उनको पास आने की सम्भावना भी शेष नहीं है.

++++++++++++++++++++++

✍**शबनम शर्मा,** नाहन, हि.प्र. की लघुकथाएं

चयन

चिलचिलाती गरमी और ऊपर से बिजली भी नहीं। परेशान सी मैं घर के गलियारे में बैठ गई। कभी–कभी हवा का झोंका मेरी शिकायत दूर कर रहा था कि सामने गली में दो छोटे–छोटे बच्चे कंधे पर प्लास्टिक का थैला लटकाए कबाड़ी की आवाज़ देते आते दिखाई दिए.

काफ़ी रद्‌दी जमा थी सोचा दे दी जाए। मैंने उन्हें आवाज़ देकर बुलाया, भाव पूछा व रद्‌दी निकालकर रख दी। उस ७–८ साल के बच्चे ने अपने थैले से तराजु निकाली व पूरी कोशिश उसे संभालने की करता हुआ रद्‌दी तोलने लगा। उसके हाथ बीच–बीच में डगमगाने लगे, वह फिर भी अपने को संभालता हुआ रद्‌दी तोलता रहा। मुझे उसके इस रुले हुए बचपन पर बहुत तरस आया। मैंने कहा, ''बच्चे तुम स्कूल क्यों नहीं जाते, ऐसे काम से क्या बन पाओगे अपनी ज़िन्दगी में।'' उसने तराजु ज़मीन पर रखी और बड़े आत्मविश्वास से बोला, ''बीबीजी, जो बच्चे स्कूलों में जाते हैं वो बीस बरस तक तो सोच भी नहीं सकते कि वो बड़े होकर क्या करेंगे? मेरा बापू कहता है, तू एक बड़ा कबाड़ी बनेगा, बीबीजी मैं एक बड़ा कबाड़ी बनूँगा।'' उसका आत्मविश्वास देखकर मैं परेशान थी।

++++++++++++++++++++

बहू

आज चार बरस से बिस्तर पर पड़ी वो बुढ़िया कराह रही थी। पहले घर पर थी परन्तु आज हस्पताल के बिस्तर पर अपनी आखिरी साँसें गिन रही थी। बेटा शुरु से ही अपनी माँ से काफ़ी हद तक जुड़ा हुआ था। माँ ने कड़ी परिस्थितियों में रहकर अपने बेटे को पढ़ाया-लिखाया व क्लास-१ अफ़सर बनाया था। माँ की पेंशन आती थी, उसी से उसका ईलाज चल रहा था। अन्दर माँ की आँखें बंद थी पर लब कभी–कभी कुछ बुदबुदा जाते थे वो कभी–कभी अपने बेटे का नाम पुकारती थी। उसकी पीठ में चोट लगी थी वह उठ न पाई थी। अन्दर कमरे में पड़ी वह बुढ़िया सबकी नज़रों में थी, पाँव में चार इंटों का भार बंधा था, कभी जाने–अनजाने में पांव हिल जाता तो मारे दर्द के वह कराह उठती। आज तो बहू–बेटा दोनों ही बरामदे में कुछ सलाह मशिवरा कर रहे थे। बेटा माँ की इस स्थिति से काफ़ी परेशान था। दो–चार बार पति को सांत्वना देकर बहू ने कहा, ''देखो जी, अब बहुत हो लिया, माँ जी ने उमर भी काफ़ी भोग ली, ये कष्ट अब उन्हें नहीं, हम सबको है मेरी मानों आप डाक्टर से कहकर कोई ऐसा इन्जैक्शन लगवा दो कि इन्हें इस कष्ट से छुट्टी मिले।'' इतना कहना था कि बेटे ने अपनी माँ के कंधे पर हाथ रखा, दबाया और अन्दर दादी के पास चला गया.

++++++++++++++++++++

दहेज

ऐ पौरुष के दानव तुझको
अब तक समझा था इंसान।
लेकिन तू है छिपा दरिन्दा,
नर में बैठा है-शैतान।
बहुत जुल्म ढाये हैं तुमने
अपने ही मॉ–बहनों पर।
आज समझ में आया है तू
दिखा दिया असली पहिचान।।

+++++++++++++++++++

बॅटवारा

नफरत की दीवार खड़ी कर
आंगन को तो बॉट लिया।
चीर दिया है मॉ का सीना।
बहते रक्त को चाट लिया।
भूल गया क्या अरे जमाना
मॉ के रिस्ते घावों को
जिसने तुझको जनम दिया है
आज उसी को काट दिया।

✍**शिवेन्द्र त्रिपाठी,**
प्रतापगढ़, उ०प्र

पुस्तक समीक्षा

कृतिः यग जग केवल स्वप्न आसार
रचनाकारःडॉ० तारा सिंह
समीक्षकः श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव',
जबलपुर, म.प्र.

तत्सम शब्द, शाश्वत भावों की रचनाएँ

अब तक इन्टरनेट पर हिन्दी साहित्य के पन्ने कम ही है, और उनसे जुड़े गंभीर रचनाधर्मी भी. डॉ० तारा सिंह उनमें से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नाम है. स्वर्ग विभा नामक इंटरनेट साहित्यिक ब्लोग वे समर्पित भाव से चला रही है. उनकी चौदहवीं काव्य कृति 'यह जग केवल स्वप्न असार', आद्योपान्त पढ़ने के बाद उनके नारी मन की भारतीय शाश्वत मूल्यों के प्रति आस्था, एवं तत्सम शब्दों में उनकी अभिव्यक्ति समझने का पाठकों को अवसर मिलता है।

कवयित्री के पास विपुल शब्द भंडार है जिसका वे अत्यन्त दक्षता से उपयोग करती है-प्रथम रचना, भेज रहा हूँ निमंत्रण, से दो पंक्तियां उद्धृत है, जो डॉ० तारा सिंह की शब्द योजना को रेखांकित करती है-

'पीताभ अग्निमय अम्बर में, प्रलय हृदय भरता, इसलिए त्याग कर धरती के निष्ठुर जल का अवलम्ब उर्ध्व नभ के प्रकाश को आत्मसात कर उनके रुप, गंध, रस से झंकृत भूषण पहनकर यहॉ चली आओ' उनकी शैली गद्यमय है. तत्सम शब्दों का विपुल प्रयोग है. संस्कृतनिष्ठ भाषा है. वैचारिक परिपक्वता कविता का मूल आधार है. कवि एवं पत्रकार श्री कृष्ण मित्र के पुस्तक के आमुख में इन कविताओं को छायावादी रचनाएँ कहा है, वे बिल्कुल ठीक है.

कवयित्री का भावपक्ष बहुत प्रबल है, उसके मन में राष्ट्रप्रेम की शाश्वत भावना हिलोरें मार रही हैं. वर्तमान सामाजिक परिदृश्य से पीड़ित वे लिखती है-

मैं ढूंढ रही हूँ भारत मॉ का ऐसा चित्र जिसमें
वर्णो से विभाजित, मानव की तकदीर न रहे।

कवयित्री समाज की नैतिक चारित्रिक गिरावट से दुखी है. नैतिकता भर रही चित्कार एवं ईमानदार दर-दर की ठोकरे खाता' इसी पीड़ा की रचनाएँ है.

'फिर भी इसके गहरे तम में, डूब जा रहा संसार
जब कि यह जग है, केवल स्वप्न असार।

यह पुस्तक इस शीर्षक रचना से उद्धृत पंक्तियां है. 'दुनिया है एक धर्मशाला' रचना भी कुछ मनोभावों की पुष्टि करती हैं.

डॉ० तारा सिंह लम्बे समय से निरंतर लिख रही है, छप रही है एवं उनकी अनेक कृतियां प्रकाशित है. उन्हें देश-विदेश की शताधिक संस्थाओं ने उनके समर्पित लेखन, चिंतन एवं साहित्यिक समर्पण हेतु सम्मानित किया है. उनके अनुभवों का संसार, उनके गॉव से प्रारम्भ होकर विश्व के कैनवास पर फैला है, एवं वे उसे समूचे ब्रहमाण्ड तक विस्तारित करने हेतु कलम का सहारा लेकर रचनाएं कर रही प्रतीत होती है. उनके भीतर की मूल नारी उसकी एक झलक से गूंज उठी कुटिया मेरी' जैसी रचना दिखती है. 'ऑसू से भीगें ऑचल पर जब कुछ धरना होगा' रचना की दो पंक्तियां है-

मातृपद को पाकर हमारी धरती कितनी पवित्र है
वहीं नारी मॉ बनकर भी कितनी कलुषित है।

स्त्री विमर्ष पर आज खूब रचना हो रही है, डॉ० तारा सिंह अगली ही पंक्यिों में इस समस्या का उत्तर देती है-

लेकिन मुझे विश्वास है, जिस दिन नारी
सोच लेगी, हमें कदर्प बनकर नहीं जीना है
नर-नारी एक ही युगपद की सग्याएँ है
तब कमल-कंदर्प का यह भेद, आप मिट जाएगा।

इसी तरह की वैचारिक दृष्टि से परिपक्व रचनाएँ इस संग्रह में है. कृति पठनीय एवं संग्रहणीय है. डॉ० तारा सिंह से हिन्दी जगत और भी श्रेयष्कर रचनाओं की आकांक्षा रखता है. विशेष रुप से इंटरनेट पर जो कार्य वे कर रही है, उसके लिए उन्हें पुनः बधाई.

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

कृतिः महात्मा भोली बाबा भोला के अवतार

लेखकः डॉ0 नरेश पाण्डेय 'चकोर'

मूल्यः 30 रुपये

प्रकाशकः शेखर प्रकाशन, बोरिंग रोड—पश्चिम, 59, गॉधीनगर, पटना—1

किसान दीवान को साहित्य कला अलंकरण

कला साहित्य संगम अकादमी, परियांवा, प्रतापगढ़, की ओर से २८वें प्रतिभा सम्मान २००९ के तहत माटी महतारी समिति संस्थापक एवं धारदार रचनाकार श्री श्री किसान दीवान को 'जागने से पहले' तथा प्यासे शब्द-कविता संग्रह और जनचेतना के विविध क्रियाकलापों के लिए कबीर सम्मान अलंकरण का आमंत्रण प्राप्त हुआ. श्री दीवान का चयन कला मार्तण्ड अलंकरण हेतु चयनित किया गया है.

इस पर श्री प्रकाश मोरयानी, आर.एल.टंडन, वीरेन्द्र ठाकुर, एस.एस.साहू, राजेन्द्र होता, आर.के.साहू, जयलाल पटेल, द्रोणकुमार, भोलाराम, विजय शर्मा, पवन चक्रधारी, श्याम बरिहा, हितेश हंस, उमेश्वर दीवान आदि ने बधई दी.

स्वतंत्रता दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

निषाद, बिन्द, कश्यप, मल्लाह, केवट, धुरिया, द्रविड़, तेन्दूलकर, वर्मन, कोल, भील, आदिवासी, बाथम, मॉझी-मझवार, कहार, गोड़-गोड़िया, धीवर, धीमर, तुरहा, रैकवार, नाई, प्रजापति, भर राजभर,आरख, विश्वकर्मा, भुर्जी, तेली, कलवार, पाल, कुशवाहा आदि जातियों के आरक्षण के लिए संघर्षरत

चौधरी परशुराम निषाद

राष्ट्रीय अध्यक्ष

आरक्षण संघर्ष समिति, मो० ९९३५६६७६९०

स्वतंत्रता दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

चौरसिया पान भंडार

पताः म्युनिसपल मार्केट लीडर रोड, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

उच्च कोटि के पान विक्रेता

जो एक बार खायेगा, बार-बार आएगा

हिन्दी उदय सम्मान हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

हिंदी के विकास के लिए पूर्ण रुपेण सक्रिय विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद अपने कार्य क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें आपसे आपके विद्यालय /महाविद्यालय में वर्ष २००८ की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ **३० दिसम्बर २००९ तक** आमंत्रित है. सम्मान समारोह फरवरी ०९ में प्रस्तावित है. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. आशा है आप हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपना प्रस्ताव हमें शीघ्र भेजने का कष्ट करें. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में **हिन्दी उदय सम्मान** व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. **अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखें:**

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-१४४/९३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,

आपकी चहेती पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" अब नये कलेवर में

सितम्बर माह में अपनी सफलता के 8 बसन्त पूर्ण कर 9वें बसन्त में प्रवेश कर रही है. 9वें वर्ष में अब पत्रिका बढ़े हुए मूल्य के साथ नये कलेवर में होगी.

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग, अपनी बात, कविताएँ, व्यक्तित्व, आध्यात्म, स्वास्थ्य, महिलाएँ, लघु कथाएं, साहित्य समाचार, स्नेह बाल मंच, स्नेह खेल की दुनिया, अहिन्दी भाषी साहित्यकार, आपने खत लिखा, पत्र/पत्रिका एवं पुस्तक समीक्षा, स्नेह युवा मंच

अन्यः मुद्दा, चिन्तन, आवरण परिचर्चा, तीन कहॉनिया

मूल्यः एक प्रति १०/- वार्षिकः ११०/- पंचवर्षीयः ५००/- आजीवनः ११००/- संरक्षक सदस्यः ५०००/-

सदस्यता ग्रहण करें और लाभ पायें:

०१ वर्ष में तीन से चार विशेषांक
०२ आजीवन सदस्य का जीवन परिचय एवं सालाना एक विज्ञापन मुफ्त
०३ संरक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं सहित प्रकाशित.
०४ ढेरों जानकारियां, ईनामी कूपन मुफ्त
०५ अनाथ/विकलांगों को सदस्यता में २५% व विज्ञापन में ४०% की छूट
०६ अहिन्दी भाषियों को १२ माह के मूल्य में १३ माह की पत्रिका, विज्ञापन में २५ प्रतिशत की छूट

एक क्रांति

लिखें: संपादक, विश्व स्नेह समाज रा. हि.मासिक
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-२११०११
email: vsnehsamaj@rediffmail.com
Mo.: (O) 09335155949

स्वतंत्रता दिवस पर सभी पाठकों को हार्दिक बधाईया

जिसस क्राइस्ट रिजनल पालिटेक्निक

जेल रोड पॉवर हाउस के पास, अंधा खाना, नैनी, इलाहाबाद-२११००८

प्रवेश प्रारम्भ

- तीन वर्षीय डिप्लोमा प्रोग्राम
- डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन कम्प्यूटर सांइस
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
- डिप्लोमा इन इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग

विशेष

- आई.टी.आई.एवं इंटर मैथ के छात्र/छात्राओं को सीधे तीसरे सेमेस्टर में प्रवेश
- आकर्षक एवं सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, भौतिकी/रसायन प्रयोगशाला, मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल प्रयोगशाला
- योग्य, अनुभवी तथा प्रशिक्षित फेकेल्टी

सम्पर्क समयः प्रातः ८ बजे से अपरान्ह २ बजे तक

सम्पर्क करें: 0532-2696075, 9415128575

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी-93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. **डाक पंजीयन संख्याः** एडी.306/2008-11 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी